RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 299
दि. 02.03.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

मिडिल-ईस्ट में महायुद्ध की आहट: अमेरिका-इजराइल के संयुक्त हमले में ईरान के सर्वोच्च नेता खामेनेई की मौत का दावा, क्षेत्रीय और वैश्विक संकट गहराया

जीएनएस)। मिडिल-ईस्ट एक बार फिर ऐसे भयंकर सैन्य संघर्ष का केंद्र बन गया है, जिसने पूरे विश्व की सुरक्षा, राजनीति और अर्थव्यवस्था को झकझोर कर रख दिया है। अमेरिका और इजराइल द्वारा ईरान पर किए गए व्यापक सैन्य हमलों के बाद हालात तेजी से युद्ध जैसे हो गए हैं। इन हमलों में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत का दावा किया गया है, जिसने पूरे क्षेत्र में राजनीतिक और धार्मिक संकट को चरम पर पहुंचा दिया है। इस घटनाक्रम ने न केवल ईरान की सत्ता संरचना को हिला दिया है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी इसके गंभीर परिणाम सामने आने की आशंका बढ़ गई है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने आधिकारिक बयान में कहा कि अमेरिका और इजराइल द्वारा किए गए संयुक्त सैन्य अभियान में ईरान के 48 वरिष्ठ नेता और सैन्य कमांडर मारे गए हैं। उन्होंने यह भी दावा किया कि इन हमलों के बाद ईरान की सैन्य क्षमता को भारी नुकसान पहुंचा है और अब ईरान बातचीत के लिए मजबूर हो सकता है। ट्रम्प ने यह भी स्पष्ट किया कि अमेरिका किसी बड़े युद्ध से बचना चाहता है, लेकिन अपने और अपने सहयोगियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हर आवश्यक कदम उठाने के लिए तैयार है। इस सैन्य अभियान में अमेरिका ने अपनी अत्याधुनिक सैन्य शक्ति का प्रदर्शन करते हुए B-2 स्टील्थ बॉम्बर्स का उपयोग किया, जिन्हें दुनिया के सबसे खतरनाक और अचूक हमलावर विमानों में गिना जाता है। इन विमानों ने ईरान की अंडरग्राउंड बैलिस्टिक मिसाइल साइट्स, सैन्य ठिकानों और कमांड सेंटरों को निशाना बनाया। इजराइली वायुसेना ने भी इस अभियान में सक्रिय भूमिका निभाई और पिछले 24 घंटों के दौरान 1,200 से अधिक बम गिराए गए। सबसे बड़ा हमला तेहरान स्थित खामेनेई के कार्यालय परिसर पर किया गया, जहां एक साथ 30 मिसाइलें दागी गईं। इस हमले में कई वरिष्ठ सैन्य अधिकारी, कमांडर और खामेनेई के परिवार के सदस्य भी मारे

जाने की खबर सामने आई है।

ईरान की राजधानी तेहरान और अन्य प्रमुख शहरों में हुए इन हमलों ने व्यापक तबाही मचाई है। सरकारी और सैन्य भवनों के साथ-साथ कई नागरिक क्षेत्रों को भी नुकसान पहुंचा है। रिपोर्ट्स के अनुसार, इन हमलों में लगभग 200 लोगों की मौत हुई है और 700 से अधिक लोग घायल हुए हैं। सबसे दर्दनाक घटना एक स्कूल पर हुए मिसाइल हमले की रही, जिसमें 148 छात्राओं की मौत हो गई और कई अन्य गंभीर रूप से घायल हो गईं। इस घटना ने पूरे ईरान को शोक और आक्रोश में डुबो दिया है।

खामेनेई की मौत के दावे के बाद ईरान में 40 दिनों का राजकीय शोक घोषित किया गया है और देशभर में सरकारी कार्यालयों, शैक्षणिक संस्थानों और सार्वजनिक गतिविधियों को अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया है। ईरान की राजनीतिक और धार्मिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए एक अस्थायी नेतृत्व समिति का गठन किया गया है, जिसमें राष्ट्रपति, न्यायपालिका प्रमुख और वरिष्ठ धार्मिक नेताओं को शामिल किया गया है। यह समिति देश की सुरक्षा, प्रशासन और सैन्य रणनीति को संभालने का काम कर रही है। इस हमले के जवाब में ईरान ने भी आक्रामक रुख अपनाया है और इजराइल तथा मिडिल-ईस्ट में स्थित अमेरिकी ठिकानों पर मिसाइल और ड्रोन हमले शुरू कर दिए हैं। ईरान की सेना ने खाड़ी क्षेत्र के कई देशों में स्थित अमेरिकी सैन्य अड्डों और रणनीतिक ठिकानों को निशाना बनाया है। इससे पूरे क्षेत्र में भय और अस्थिरता का माहौल बन गया है। कई देशों ने अपने हवाई क्षेत्र को अस्थायी रूप से बंद कर दिया है और नागरिकों को सुरक्षित स्थानों पर रहने की सलाह दी है। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने अपने बयान में कहा कि यह अभियान ईरान की आक्रामक सैन्य और परमाणु गतिविधियों को रोकने के लिए आवश्यक था। उन्होंने कहा कि इजराइल अपनी सुरक्षा के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार है और आने वाले दिनों में यह सैन्य अभियान और तेज हो सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका और इजराइल के बीच सैन्य सहयोग पहले से कहीं अधिक मजबूत हुआ है और दोनों देश मिलकर क्षेत्र में स्थिरता स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।

इस संघर्ष का प्रभाव केवल मिडिल-ईस्ट तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका असर पूरी दुनिया पर पड़ सकता है। वैश्विक तेल बाजार में अस्थिरता बढ़ गई है और तेल की कीमतों में तेजी से उछाल देखा जा रहा है। मिडिल-ईस्ट दुनिया का सबसे बड़ा तेल उत्पादक क्षेत्र है, और यहां किसी भी प्रकार का युद्ध वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति को प्रभावित कर सकता है। इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, विमानन और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी इस संघर्ष का गंभीर प्रभाव पड़ सकता है।

संयुक्त राष्ट्र और विश्व के कई प्रमुख देशों ने इस स्थिति पर गहरी चिंता व्यक्त की है और सभी पक्षों से संयम बरतने और शांति स्थापित करने की अपील की है। वैश्विक नेताओं का मानना है कि यदि यह संघर्ष और बढ़ता है, तो यह एक बड़े क्षेत्रीय युद्ध में बदल सकता है, जिसके परिणाम अत्यंत विनाशकारी हो सकते हैं। मिडिल-ईस्ट पहले भी कई बार युद्ध और संघर्ष का केंद्र रहा है, लेकिन इस बार की स्थिति अधिक गंभीर मानी जा रही है, क्योंकि इसमें दुनिया की सबसे बड़ी सैन्य शक्तियों की सीधी भागीदारी है। आने वाले दिनों में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि क्या यह संघर्ष कूटनीतिक समाधान की ओर बढ़ता है या एक बड़े और लंबे युद्ध का रूप लेता है। फिलहाल, पूरी दुनिया की नजरें इस संकट पर टिकी हुई हैं और सभी देश इस स्थिति के संभावित परिणामों को लेकर चिंतित हैं।

जंतर-मंतर से बदलाव का बिगुल, केजरीवाल ने केंद्र सरकार पर बोला हमला और जनता से नए राजनीतिक संघर्ष का किया आह्वान

जीएनएस)। अरविंद केजरीवाल ने रविवार को जंतर मंतर पर आयोजित एक विशाल जनसभा में केंद्र सरकार के खिलाफ खुलकर मोर्चा खोलते हुए देश की राजनीति में बदलाव का बड़ा संकेत दिया। हजारों की संख्या में पहुंचे समर्थकों और कार्यकर्ताओं के उत्साह के बीच उन्होंने घोषणा की कि अब देश में बदलाव की उलटी गिनती शुरू हो चुकी है और आने वाले समय में जनता स्वयं अपने अधिकारों के लिए निर्णायक भूमिका निभाएगी। राजधानी नई दिल्ली के इस ऐतिहासिक स्थल पर आयोजित इस रैली को आम आदमी पार्टी की अब तक की सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक सभाओं में से एक माना जा रहा है, जहां मंच से दिए गए संदेशों ने आगामी राजनीतिक परिदृश्य को लेकर नई चर्चा छेड़ दी है।

सभा स्थल पर सुबह से ही समर्थकों का आना शुरू हो गया था। दूर-दराज के इलाकों से आए लोगों में जबरदस्त उत्साह दिखाई दे रहा था। मंच के सामने बड़ी संख्या में मौजूद लोगों ने पार्टी के झंडे और तख्तियां लेकर नारे लगाए और अपने नेता के समर्थन में जोरदार आवाज बुलंद की। इस आयोजन में आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं, विभिन्न राज्यों के पदाधिकारियों और हजारों कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। खास बात यह रही कि दिल्ली के अलावा पंजाब, गुजरात और गोवा से भी बड़ी संख्या में लोग पहुंचे, जिससे यह स्पष्ट संकेत मिला कि पार्टी अपने जनाधार को राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत करने की दिशा में सक्रिय प्रयास कर रही है।

अपने संबोधन में केजरीवाल ने केंद्र में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि पिछले कुछ वर्षों में राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के नाम पर लोकतांत्रिक संस्थाओं का दुरुपयोग किया गया और विपक्षी नेताओं को झूठे मामलों में फंसाने की कोशिश की गई। उन्होंने कहा कि उनके खिलाफ लगाए गए भ्रष्टाचार और कथित शराब घोटाले जैसे आरोप पूरी तरह से निराधार थे और अदालतों में इन आरोपों का कोई ठोस आधार साबित नहीं हो सका। उन्होंने मंच से जनता को संबोधित करते हुए कहा कि सच को दबाने की कोशिशें लंबे समय तक सफल नहीं हो सकतीं और अंततः सत्य की ही जीत होती है।

केजरीवाल ने अपने राजनीतिक और व्यक्तिगत जीवन की यात्रा का भी जिक्र किया और बताया कि उन्होंने हमेशा ईमानदारी और पारदर्शिता को प्राथमिकता दी है। उन्होंने कहा कि पढ़ाई पूरी करने के बाद उनके पास विदेश में करियर बनाने के अवसर थे, लेकिन उन्होंने देश की सेवा को प्राथमिकता दी। उन्होंने सरकारी सेवा के दौरान अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि उन्होंने कभी भी किसी से रिश्वत नहीं ली और न ही किसी गलत काम में शामिल हुए। उन्होंने चुनौती देते हुए कहा कि अगर कोई भी व्यक्ति यह साबित कर दे कि उन्होंने व्यक्तिगत लाभ के लिए भ्रष्टाचार किया है, तो वह तुरंत राजनीति छोड़ने के लिए तैयार हैं।

सभा के दौरान उन्होंने देश के विकास और बुनियादी ढांचे के मुद्दों को भी उठाया और कहा कि आज भी कई क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं है। उन्होंने कहा कि जब दुनिया के कई देशों में नागरिकों को बेहतर सड़कें, शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छ वातावरण उपलब्ध है, तब भारत जैसे विशाल और संभावनाओं से भरे देश में भी नागरिकों को समान स्तर की सुविधाएं मिलनी चाहिए। उन्होंने दावा किया कि उनकी पार्टी ने जहां भी सरकार बनाई है, वहां शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली और पानी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार किए गए हैं और आम लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए ठोस कदम उठाए गए हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि जनता के मन में यह धारणा बन गई थी कि व्यवस्था में बदलाव संभव नहीं है, लेकिन उनकी पार्टी ने यह विश्वास दिलाया कि यदि नीयत साफ हो और नेतृत्व ईमानदार हो, तो सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि देश के लोग अब जागरूक हो रहे हैं और अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रहे हैं। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे लोकतंत्र की ताकत को समझें और जनहित के मुद्दों पर एकजुट होकर आवाज उठाएं।

सभा के दौरान पार्टी के अन्य नेताओं ने भी अपने विचार रखे और कहा कि यह रैली केवल एक राजनीतिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह देश में नई राजनीतिक चेतना का प्रतीक है। नेताओं ने दावा किया कि आने वाले समय में जनता की भागीदारी से एक नई राजनीतिक दिशा तय होगी और पारदर्शिता तथा जवाबदेही को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी।

डिजिटल युग में महिला सशक्तिकरण की नई पहल, दिल्ली में 'पिंक कार्ड' से सार्वजनिक परिवहन होगा आसान और सुरक्षित

जीएनएस)। राजधानी नई दिल्ली में महिलाओं की सुविधा, सुरक्षा और सशक्तिकरण को ध्यान में रखते हुए एक ऐतिहासिक पहल की जा रही है, जिसके तहत दिल्ली सरकार महिलाओं के लिए विशेष 'पिंक कार्ड' योजना शुरू करने जा रही है। यह योजना सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को अधिक आधुनिक, डिजिटल और महिला-हितैषी बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम मानी जा रही है। केंद्र सरकार की 'वन नेशन, वन कार्ड' अवधारणा से प्रेरित इस योजना का उद्देश्य महिलाओं को न केवल यात्रा में सुविधा देना है, बल्कि उन्हें तकनीकी रूप से सशक्त बनाकर डिजिटल परिवहन व्यवस्था से जोड़ना भी है। इस महत्वाकांक्षी योजना का औपचारिक शुभारंभ 2 मार्च को राजधानी के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में आयोजित विशेष कार्यक्रम 'सशक्त नारी, समृद्ध दिल्ली' के दौरान किया जाएगा। इस अवसर पर देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू स्वयं इस योजना की शुरुआत करेंगी, जो इस पहल की महत्ता और राष्ट्रीय स्तर पर इसके महत्व को दर्शाता है। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिलाएं, जनप्रतिनिधि और प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहेंगे और चयनित महिलाओं को प्रतीकात्मक रूप से पिंक कार्ड वितरित किए जाएंगे। दिल्ली सरकार के अनुसार यह पिंक कार्ड एक स्मार्ट नेशनल कॉमन मोबिलिटी कार्ड (एनसीएमसी) होगा, जिसके माध्यम से महिलाओं को दिल्ली परिवहन निगम की बसों में निःशुल्क यात्रा की सुविधा प्राप्त होगी। इसके साथ ही यही कार्ड राजधानी की अन्य सार्वजनिक परिवहन सेवाओं जैसे मेट्रो और क्षेत्रीय रैपिड रेल परिवहन प्रणाली में भी उपयोग किया जा सकेगा। इससे महिलाओं को अलग-अलग टिकट या कार्ड रखने की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी और एक ही कार्ड से विभिन्न परिवहन साधनों में यात्रा करना संभव होगा। यह व्यवस्था समय की बचत के साथ-साथ यात्रा को अधिक सहज और व्यवस्थित बनाएगी।

इस योजना के तहत सरकार द्वारा तीन प्रकार के स्मार्ट कार्ड जारी किए जाएंगे, जिनमें पिंक कार्ड, ब्लू कार्ड और ऑरेंज कार्ड शामिल होंगे। पिंक कार्ड विशेष रूप से दिल्ली की पात्र महिला निवासियों के लिए होगा, जिसके माध्यम से उन्हें बसों में निःशुल्क यात्रा का लाभ मिलेगा। ब्लू कार्ड सामान्य यात्रियों के लिए होगा, जिससे वे डिजिटल माध्यम से किराया भुगतान कर सकेंगे, जबकि ऑरेंज कार्ड मासिक पास उपयोग करने वाले यात्रियों के लिए जारी किया जाएगा। पहले चरण में पिंक और ब्लू कार्ड जारी किए जाएंगे और बाद में ऑरेंज कार्ड को लागू किया जाएगा, जिससे पूरी परिवहन व्यवस्था को चरणबद्ध तरीके से डिजिटल बनाया जा सके।

कार्ड वितरण और संचालन के लिए सरकार ने अधिकृत एजेंसियों को जिम्मेदारी सौंपी है, जो इस प्रक्रिया को पारदर्शी और सुरक्षित बनाएंगी। पिंक कार्ड की पूरी लागत दिल्ली सरकार द्वारा वहन की जाएगी, जिससे पात्र महिलाओं को बिना किसी शुल्क के यह सुविधा प्राप्त हो सकेगी। यह कदम सरकार की महिला-कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है और महिलाओं के लिए सार्वजनिक परिवहन को अधिक सुलभ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

पिंक कार्ड प्राप्त करने के लिए राजधानी में लगभग 50 विशेष केंद्र स्थापित किए जाएंगे, जहां पात्र महिलाएं आवेदन कर सकेंगी और अपना कार्ड प्राप्त कर सकेंगी। इन केंद्रों में कार्यालयों के साथ-साथ परिवहन विभाग के चयनित केंद्र शामिल होंगे। पात्रता की पुष्टि के लिए कार्ड को आधार और मोबाइल नंबर से जोड़ा जाएगा, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि केवल वास्तविक पात्र महिलाएं ही इस योजना का लाभ प्राप्त करें। आधार प्रमाणीकरण के माध्यम से आवेदक की आयु, लिंग और निवास की पुष्टि की जाएगी, जिससे पारदर्शिता बनी रहे और किसी भी प्रकार की अनियमितता या डुप्लिकेशन को रोका जा सके।

यह पिंक कार्ड पूरी तरह से टच-फ्री और सुरक्षित स्मार्ट कार्ड होगा, जिससे प्रत्येक यात्रा का डिजिटल रिकॉर्ड दर्ज किया जा सकेगा। इससे नकद लेन-देन की आवश्यकता कम होगी और पूरी व्यवस्था अधिक पारदर्शी और आधुनिक बनेगी। डिजिटल रिकॉर्ड के माध्यम से सरकार को यह जानकारी भी प्राप्त होगी कि किन मार्गों पर अधिक यात्री यात्रा कर रहे हैं और किन क्षेत्रों में परिवहन सेवाओं को और बेहतर बनाने की आवश्यकता है। इस डेटा के आधार पर बसों की संख्या, मार्गों का निर्धारण और परिवहन सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार किया जा सकेगा।

स्पेन में लंच ब्रेक के दौरान बीयर पीने के बाद एक व्यक्ति की नौकरी चली गई, अदालत ने उसे 50 लाख रुपये का मुआवजा दिया

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। यह स्पेन की एक कहानी है, जहाँ एक कर्मचारी पर काम पर आने के बाद बीयर पीने का संदेह था। कंपनी की नीति के अनुसार, कार्यालय समय के दौरान और कार्यालय के अंदर शराब या अल्कोहल युक्त कोई भी पेय पीना प्रतिबंधित था। हालांकि, इस व्यक्ति के बीयर पीने के संदेह में, उसके वरिष्ठ अधिकारियों ने उस पर नज़र रखने के लिए जासूस लगा दिए। उसने कार्यालय में इस तरह से शराब नहीं पी थी जिससे किसी की नज़र उस पर पड़े, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वह वापस आने के बाद कहीं से बीयर पी रहा था। इस शिकायत पर, कंपनी ने कर्मचारी पर नज़र रखने के लिए एक जासूस लगाया और कंपनी का संदेह सही साबित हुआ। लंच ब्रेक के दौरान, वह पार्किंग में जाकर अपनी कार में बैठकर बीयर पीता था। जब इसका सबूत मिला, तो कंपनी ने उसे तुरंत रंगे हाथों पकड़ लिया।

शून्य त्रुटि एजेंसी

कर्मचारी को अचानक नौकरी छूटने का डर भी था। हालांकि, उसने तर्क दिया कि उसकी बर्खास्तगी का कारण गैरकानूनी था। उसने अपील की। मामला अदालत में गया और अदालत ने कर्मचारी के पक्ष में फैसला सुनाया। न्यायाधीश ने कहा कि कर्मचारी लंच ब्रेक के दौरान बीयर पी रहा था। लंच ब्रेक को कार्यालय के कार्य समय में नहीं गिना जाता है।

दूसरे, वह अपनी कार में शराब पी रहा था और इसलिए उसने कंपनी की इमारत का इस्तेमाल नहीं किया। वहीं दूसरी ओर, कंपनी यह साबित नहीं कर पाई कि बीयर पीने का उसके काम पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा था। अदालत ने कंपनी को आदेश दिया कि या तो वह कर्मचारी को फिर से नौकरी पर रखे या 50 लाख रुपये का मुआवजा दे। कंपनी ने कर्मचारी को फिर से नौकरी पर रखने के बजाय मुआवजा देना चुना।

राजस्थान सरकार ने माउंट आबू, कामा और जहाजपुर के ऐतिहासिक स्वरूप को बहाल करने के लिए उनके नाम बदल दिए हैं

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। हम अक्सर कहते हैं कि हमने अपना नाम कहां रखा है, लेकिन हमने बहुत कम नाम रखा है। और राजस्थान सरकार ने भी कुछ ऐसा ही किया है।

शून्य त्रुटि विज्ञापन

देश के अन्य राज्यों में नामों में परिवर्तन की लहर चलने के साथ ही राजस्थान सरकार भी ऐसा ही कर रही है। हाल ही में राजस्थान सरकार ने तीन शहरों के नाम बदले हैं। माउंट अबू को अबूराज, कामा को कामावन और जहाजपुर को यज्ञपुर के नाम से जाना जाएगा।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विधानसभा में यह घोषणा की। सरकार ने इसे क्षेत्र की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान को पुनर्स्थापित करने की दिशा में एक बड़ा कदम बताया है।

राज्य का एकमात्र हिल स्टेशन, सिरोही जिले में स्थित माउंट अबू, कई वर्षों से न केवल राजस्थान बल्कि देश और विदेश के पर्यटकों के लिए भी एक प्रमुख आकर्षण रहा है। माउंट अबू को हिंदी में अबू पर्वत के नाम से जाना जाता है। अबूराज इसकी प्राचीन पहचान है, जिसे अब मान्यता मिल चुकी है।

भरतपुर जिले में धार्मिक महत्व रखने वाले कामा का नाम बदलकर कामावन कर दिया जाएगा। कामा को ब्रज क्षेत्र की संस्कृति से गहराई से जुड़ा हुआ माना जाता है। जहाजपुर भीलवाड़ा जिले का एक ऐतिहासिक शहर है। इसकी जड़ें प्राचीन धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं में गहरी हैं। सरकार का दावा है कि यह शहर प्राचीन यज्ञ परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं से जुड़ा हुआ है। इसीलिए इसका यह नामकरण किया गया है।

संपादकीय

आफत से राहत

दिल्ली की एक ट्रायल कोर्ट ने शराब नीति से जुड़े कथित भ्रष्टाचार मामले में आम आदमी पार्टी के संयोजक व दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया को आरोप मुक्त किया है। उल्लेखनीय है कि यह फैसला सीबीआई की तरफ से दायर मामले में आया है। अदालत ने सीबीआई की जांच में खामियों को उजागर करते हुए कहा कि आरोप गवाह या ठोस सबूतों पर आधारित नहीं हैं। अदालत का तर्क था कि चार्जशीट में उल्लेखित दावे तार्किक आधार नहीं रखते। उल्लेखनीय है कि अरविंद केजरीवाल के मुख्यमंत्री रहते हुए दिल्ली सरकार ने एक नई आबकारी नीति साल 2021 में लागू की थी। जिसके अंतर्गत शराब कारोबार निजी क्षेत्र को देने का निर्णय लिया गया था। तत्कालीन सरकार ने दलील दी थी कि नई नीति राज्य के राजस्व में आशातीत वृद्धि करेगी। बहरहाल, दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री केजरीवाल और उनके डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया फिलहाल नैतिक रूप से खुद को बेहतर स्थिति में होने का दावा कर सकते हैं। उल्लेखनीय है कि ट्रायल कोर्ट ने सीबीआई द्वारा दर्ज दिल्ली उत्पाद शुल्क नीति मामले में केजरीवाल तथा 21 अन्य आरोपियों को बरी कर दिया है। निश्चय ही संकट से जूझ रही आम आदमी पार्टी के लिये यह फैसला प्राणवायु जैसा साबित हो सकता है। दरअसल, कोर्ट ने इस बाबत सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि जांच एजेंसी का मामला न्यायिक जांच की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है। कोर्ट का कहना था कि अटकलों व अनुमानों को कानूनी रूप से मान्य सबूतों के रूप में पेश नहीं किया जा सकता। बहरहाल, इस फैसले के खिलाफ सीबीआई ने दिल्ली हाईकोर्ट में अपील दायर कर दी है। इसके बावजूद ट्रायल कोर्ट का यह फैसला केजरीवाल व उनकी टीम के लिये आधी लड़ाई जीतने जैसा है। जिससे वे खुद को आम आदमी पार्टी के कोर वोटरों को अपने पाक-साफ होने का विश्वास दिलाने का प्रयास कर सकते हैं।

उल्लेखनीय है कि बीते साल दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा ने इस प्रकरण को अपना मुख्य मुद्दा बनाकर आम आदमी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व पर तीखे हमले बोले थे। पार्टी ने दिल्ली के मतदाताओं को यह समझाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी कि केजरीवाल सरकार का भ्रष्टाचार विरोधी अभियान सिर्फ एक राजनीतिक प्रपंच है। बहरहाल, इन आरोपों के बीच स्वच्छ शासन का वादा करते हुए भाजपा ने 26 वर्ष के लंबे अंतराल पर दिल्ली की सत्ता में वापसी की थी, जबकि आप दूसरे स्थान पर रही थी। दिल्ली विधानसभा में मिली शिकस्त के बाद ही आप के शीर्ष नेतृत्व ने अपना पूरा ध्यान पंजाब पर लगाया था। आज पंजाब ही ऐसा राज्य है जहां आम आदमी पार्टी की सरकार बची है। भले ही ट्रायल कोर्ट के फैसले को दिल्ली हाईकोर्ट में चुनौती दी है,लेकिन एक बात तो तय है कि निचली अदालत के आदेश के बाद आप को दिल्ली में खोये जनाधार को फिर से हासिल करने का मौका मिल सकेगा। वह अपनी पार्टी के मुख्य भ्रष्टाचार विरोधी अभियान को फिर से चलाने के लिये नैतिक बल तो हासिल कर पायी है। दरअसल, इस फैसले से जांच में अत्यधिक दखलंदाजी को लेकर कई असहज करने वाले सवाल भी उठे हैं। खासकर अदालत की वह टिप्पणी, जिसमें कहा गया कि जांच एक पूर्वनिर्धारित दिशा में चलती प्रतीत होती है। यानी जांच में उचित प्रक्रिया का उल्लंघन किया गया है। दूसरी ओर प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी ने कहा है कि आबकारी नीति मामले में जुड़ी उसकी मनी लॉन्ड्रिंग की स्वतंत्र जांच मजबूत आधार रखती है। कानून के पंडित कयास लगा रहे हैं कि यदि सीबीआई मामले में निचली अदालत के फैसले को उच्च न्यायालय द्वारा भी बरकरार रखा जाता है तो ईडी द्वारा अभियोजन की कानूनी वैधता पर नये सिरे से सवाल उठ सकते हैं। बहरहाल, निचली अदालत के फैसले ने केजरीवाल, सिसोदिया तथा आम आदमी पार्टी में नई ऊर्जा का संचार तो कर ही दिया है। निश्चित रूप से दिल्ली में सरकार बनाने वाली भाजपा के लिये यह स्थिति असहज करने वाली है।

झांसी की होली पर कहर बरपाया था डलहौजी ने

> स्वतंत्रता सेनानी होली के महीनों पूर्व ही गाजे-बाजे के साथ देशवासियों में स्वतंत्रता की चेतना जगाने वाले फगुए गाना और गुलाल व फूलों से होली खेलना शुरू कर देते थे। धुलेंडी के दिन महिलाएं और बच्चे खादी के वस्त्र पहनकर सुराजी गाने गाते थे।

वर्ष 1920 में महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन का आह्वान किया तो विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी के इस्तेमाल की उनकी अपील ने ऐसा रंग दिखाया था कि देशवासियों ने विदेशी कपड़ों तक की होली जला डाली थी। लेकिन उस दौर की होली का यह पूरा परिचय नहीं है। तब होली आती तो आज़ादी के दीवानों और उनकी राह में कांटे बिछाते रहने वाले अंग्रेजों के बीच नए सिरे से ठन जाती थी। कारण यह था कि आज़ादी के दीवाने प्रायः होली पर देशवासियों को राग-द्वेष भुलाकर एक करने, जगाने और लड़ने को प्रेरित करने की नई कवायदें शुरू करते थे, जो अंग्रेजों को कतई गवारा नहीं होती थीं।

1853 में झांसी की होली के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था, 21 नवम्बर, 1853 को उसके राजा गंगाधर राव नेवालकर के निःसंतान निधन के बाद अंग्रेज गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी ने झांसी पर 'डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स' का कहर बरपाने के लिए होली का ही दिन चुना था। इतिहासकारों के अनुसार, गंगाधर राव अपने रहते अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर गए थे। लेकिन उनके निधन के बाद डलहौजी ने इसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया था।

प्रसंगवश, डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीनस्थ भारतीय राज्यों व रियासतों को उसके साम्राज्य में मिलाने की ऐसी 'हड़प नीति' थी, जिसके तहत कोई राजा निःसंतान रहते दुनिया को अलविदा कह जाता तो राज्य को कंपनी के साम्राज्य में मिला लिया जाता था।

झांसी को हड़पने के लिए डलहौजी ने इसी नीति के तहत 7 मार्च, 1854 को एक फरमान निकाला और इरादतन होली के दिन ही झांसी भेजा। फरमान के साथ एक इश्तिहार भी था, जिसमें लिखा था कि अब कंपनी की ओर से झांसी का शासन मेजर एलिस चलाएंगे।

इस रंग में भंग के बाद झांसीवासी भला होली कैसे मनाते? रानी लक्ष्मीबाई ने भी होली के सारे समारोह रद्द कर दिए और महल में जाकर भविष्य पर छाए काले बादलों से निपटने की योजनाएं बनाने में व्यस्त हो गईं। तब से डेढ़ से ज्यादा शताब्दी बीत गईं, लेकिन झांसी के लोग उस फरमान के आने, रानी द्वारा उसे अंगूठा दिखाने और इससे क्रुद्ध अंग्रेजों के विकट हमले के दौरान झांसी को बचाते हुए वीरगति प्राप्त करने की याद में होली के दिन होली नहीं मनाते।

काश! लाहौरवासी भी झांसी वालों की तरह उन छह बब्बर अकाली आंदोलनकारियों की शहादत को याद रखते और उनका शोक मनाते, 1926 में जिन्हें अंग्रेजों ने लाहौर सेंट्रल जेल में होली के दिन ही फांसी दे दी थी। उस साल होली 27 फरवरी को थी और उस दिन फांसी पर लटकाए गए इन आंदोलनकारियों के नाम थे—किशन सिंह गड़गज्ज, संता सिंह, दिलीप सिंह, नंद सिंह, करम सिंह और धरम सिंह।

तब भगत सिंह 'क्रांतिकारियों का शहर' कहलाने वाले कानपुर में रहकर आज़ादी की लड़ाई में ऐतिहासिक भूमिका निभाने वाले गणेश शंकर विद्यार्थी के लोकप्रिय पत्र 'प्रताप' में काम कर रहे थे। उन्होंने 'एक पंजाबी युवक' के नाम से 15 मार्च, 1926 के 'प्रताप' में लेख लिखकर इस बात पर रोष और क्षोभ जताया था कि इस छह वीरों के बलिदानों को लेकर लाहौर शोक में नहीं डूबा और होली मनाता रहा।

इसी 'प्रताप' के शहर कानपुर में 1942 में होली के दिन हटिया बाजार के रज्जन बाबू पार्क में जमा क्रांतिकारी तिरंगे झंडे को खूब ऊंचा फहराकर होली खेल रहे थे, तो अंग्रेजों के दर्जन भर घुड़सवार सिपाही सरपट घोड़े दौड़ाते आए और तिरंगा उतारने लगे। दोनों पक्षों में भीषण संघर्ष छिड़ गया। अंततः सिपाही भारी पड़े और अंग्रेज अफसरों ने और पुलिस बल बुलाकर 45 क्रांतिकारियों को क्रूरतापूर्वक गिरफ्तार कर लिया।

जैसे ही इन गिरफ्तारियों की खबर फैली, समूचा कानपुर क्रांतिकारियों के समर्थन में सड़कों पर उतर आया। छह दिन बीत गए, फिर भी जनाक्रोश नहीं थमा तो अफसरों को विवश होकर क्रांतिकारियों की रिहाई का आदेश देना पड़ा। सातवें दिन क्रांतिकारी जेल से छूटे तो उन्हें एक जुलूस के साथ कानपुरवासी उन्हें हटिया के उसी रज्जन बाबू पार्क में ले आए, जहां तिरंगा फहराने के जुर्म में सिपाहियों ने उन्हें पकड़ा था। फिर वहां जश्नपूर्वक होली मनाई। तभी से कानपुर में सात दिन होली मनाई जाती है। गौरतलब है कि स्वतंत्रता सेनानी होली को सामाजिक सुधार और शिक्षा का त्योहार बनाने की अपनी कोशिशों को लेकर अंग्रेजों से टकराते रहे थे। स्वतंत्रता सेनानी होली के महीनों पूर्व ही गाजे-बाजे के साथ देशवासियों में स्वतंत्रता की चेतना जगाने वाले फगुए गाना और गुलाल व फूलों से होली खेलना शुरू कर देते थे। धुलेंडी के दिन महिलाएं और बच्चे खादी के वस्त्र पहनकर अपने मोहल्लों में और कई बार मोहल्ले के बाहर भी निकलते और सुराजी गाने गाते थे। उन सारे गानों में कुरीतियां व रूढ़ियां मिटाकर समाज को बेहतर बनाने पर जोर होता था। जेलों में बंद स्वतंत्रता सेनानी भी कभी जेल के अफसरों से इजाज़त लेकर और कभी इजाज़त न मिलने पर उसकी अवज्ञा कर होली खेलते थे। उनकी होली में भी सर्वाधिक जोर सद्भाव पर ही होता था।

प्रेरणा

लोकभाषा में दर्ज पहाड़ का विखरता परिवार और बदलता सामाजिक यथार्थ

पहाड़ का जीवन केवल प्राकृतिक सौंदर्य का पर्याय नहीं है, बल्कि वह मानवीय संबंधों, सामूहिक जीवन और सांस्कृतिक परंपराओं की एक गहरी और जीवंत संरचना भी है। यहां का समाज लंबे समय तक संयुक्त परिवार, पारस्परिक सहयोग और सामूहिक जिम्मेदारी की भावना पर आधारित रहा है। किंतु आधुनिकता, पलायन और बदलती जीवनशैली ने इस संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों की पीड़ा, संवेदना और सामाजिक विमर्श को लोकभाषा की सहजता में अभिव्यक्त करने वाला काव्य संग्रह ज आम्म छांट नई समकालीन लोकसाहित्य में एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप के रूप में सामने आता है। इसके रचयिता महाबीर रवांल्टा ने पहाड़ के समाज की उस आंतरिक सच्चाई को शब्द दिए हैं, जो अक्सर विकास और आधुनिकता की चकाचौंध में अनसुनी रह जाती है।

यह संग्रह उत्तराखंड के उत्तरकाशी अंचल की रवांल्टी लोकभाषा में रचा गया है, जो अपने आप में इस कृति की आत्मा है। लोकभाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह उस समाज की स्मृति, उसकी संवेदना और उसकी पहचान का आधार होती है। रवांल्टी भाषा में व्यक्त भाव सीधे उस जीवन से जुड़े हुए हैं, जिसे कवि ने स्वयं जिया और अनुभव किया है। इस संग्रह में शामिल 40 से अधिक कविताएं पहाड़ के सामाजिक ढांचे में आ रहे बदलाव, परिवार के विघटन, भावनात्मक दूरी और बदलते मानवीय संबंधों का अत्यंत संवेदनशील चित्र प्रस्तुत करती हैं। संग्रह का शीर्षक 'ज आम्म छांट नई' अपने भीतर गहरी प्रतीकात्मकता समेटे हुए है। इसका अर्थ केवल मां से किया गया एक भावनात्मक प्रश्न नहीं, बल्कि उस सामूहिक संरचना से संवाद है, जिसने व्यक्ति को जीवन भर सहारा दिया। यहां 'मां' घर की दीवारों से कहीं अधिक व्यापक अर्थ रखती है। वह परिवार है, वह गांव है, वह परंपरा है और वह सामाजिक एकता है, जिसके टूटने से व्यक्ति भीतर तक अकेला और असुरक्षित हो जाता है। यह शीर्षक पूरे संग्रह में एक स्थायी भाव की तरह उपस्थित रहता है और पाठक को बार-बार यह सोचने के लिए विवश करता है कि आखिर वह कौन-सी परिस्थितियां थीं, जिन्होंने इस सामूहिकता को बिखेर दिया। महाबीर रवांल्टा की कविताओं में संयुक्त परिवार के विघटन की प्रक्रिया को अत्यंत मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। पहले जहां एक ही छत के नीचे कई पीढ़ियां साथ रहती थीं, वहां अब परिवार छोटे-छोटे हिस्सों में बंट गए हैं। यह बंटवारा केवल संपत्ति या स्थान का नहीं, बल्कि भावनाओं और संबंधों का भी है। कवि ने दिखाया है कि किस तरह अलग-अलग चूल्हों ने केवल घरों को ही नहीं, बल्कि दिलों को भी अलग कर दिया है। इस विघटन के साथ ईर्ष्या, स्वार्थ और आत्मकेंद्रित जीवनशैली ने जन्म लिया है, जिसने पारंपरिक सामाजिक मूल्यों को कमजोर कर दिया है। इस संग्रह की कविताएं गांव से शहर की ओर बढ़ते पलायन की त्रासदी को भी अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित करती हैं। बेहतर जीवन की तलाश में पहाड़ के युवा शहरों की ओर जा रहे हैं, जिससे गांव खाली होते जा रहे हैं। पीछे रह जाते हैं केवल बुजुर्ग, सूने घर और स्मृतियों से भरे आंगन। यह खालीपन केवल भौतिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और सामाजिक भी है। जब युवा गांव छोड़ते हैं, तो उनके साथ गांव की जीवंतता और उसकी सामाजिक ऊर्जा भी कम हो जाती है। कवि ने इस पीड़ा को अत्यंत सरल लेकिन प्रभावशाली शब्दों में अभिव्यक्त किया है। आधुनिक तकनीक का प्रभाव भी इस संग्रह का एक महत्वपूर्ण विषय है। मोबाइल फोन और डिजिटल दुनिया ने जहां संचार को आसान बनाया है, वहीं उन्होंने मानवीय संबंधों की आत्मीयता को भी प्रभावित किया है। पहले जहां लोग एक-दूसरे के साथ समय बिताते थे, अब वे अपने-अपने मोबाइल में व्यस्त रहते हैं। इस बदलाव ने रिश्तों की गहराई को कम कर दिया है और व्यक्ति को अधिक अकेला बना दिया है। कवि ने इस परिवर्तन को अत्यंत संवेदनशील दृष्टि से देखा है और यह दिखाया है कि तकनीकी प्रगति के साथ मानवीय संवेदनाओं में भी बदलाव आया है। महाबीर रवांल्टा की कविताओं की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सादगी और वास्तविकता है। उन्होंने जीवन के अनुभवों को बिना किसी कृत्रिमता के प्रस्तुत किया है। उनकी भाषा सहज है, लेकिन उसमें गहरी संवेदना और विचार की शक्ति है। यही कारण है कि उनकी कविताएं पाठक के हृदय को सीधे स्पर्श करती हैं और उसे अपने जीवन और समाज के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करती हैं। यह संग्रह केवल व्यक्तिगत भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक विमर्श भी है। यह हमें यह समझने में मदद करता है कि आधुनिकता और विकास की प्रक्रिया ने हमारे समाज को किस तरह प्रभावित किया है। यह कृति हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि क्या भौतिक प्रगति के बदले हम अपनी सामाजिक और भावनात्मक जड़ों को खो रहे हैं। क्या हम उस सामूहिकता को खो रहे हैं, जिसने हमें एक समाज के रूप में मजबूत बनाया था। लोकभाषा में रचित यह काव्य संग्रह सांस्कृतिक संरक्षण की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। लोकभाषाएं किसी भी समाज की सांस्कृतिक धरोहर होती हैं। उनमें उस समाज की स्मृतियां, उसकी परंपराएं और उसकी पहचान सुरक्षित रहती है। जब लोकभाषा में साहित्य रचा जाता है, तो वह केवल साहित्यिक सृजन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण का कार्य भी होता है। इस दृष्टि से 'ज आम्म छांट नई' केवल एक काव्य संग्रह नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक दस्तावेज भी है। इस संग्रह की एक और विशेषता यह है कि यह पाठक को केवल भावनात्मक रूप से प्रभावित नहीं करता, बल्कि उसे सामाजिक और सांस्कृतिक प्रश्नों पर गंभीरता से विचार करने के लिए भी प्रेरित करता है। यह कृति हमें यह समझने में मदद करती है कि परिवार और समाज केवल सामाजिक संस्थाएं नहीं, बल्कि हमारे अस्तित्व का आधार हैं। जब ये संस्थाएं कमजोर होती हैं, तो व्यक्ति भी भीतर से कमजोर हो जाता है।

अंततः, महाबीर रवांल्टा का यह काव्य संग्रह पहाड़ के समाज की आत्मा का सजीव चित्रण है। यह कृति हमें यह याद दिलाती है कि विकास और आधुनिकता की दौड़ में हमें अपनी जड़ों को नहीं भूलना चाहिए। यह संग्रह हमें यह सिखाता है कि मानवीय संबंध, सामूहिकता और सामाजिक एकता ही किसी भी समाज की सबसे बड़ी शक्ति होती है। 'ज आम्म छांट नई' केवल एक साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि एक सामाजिक चेतावनी, एक सांस्कृतिक दस्तावेज और एक भावनात्मक पुकार है, जो हमें अपने समाज और अपने संबंधों के महत्व को पुनः समझने के लिए प्रेरित करती है।

कठघरे में खड़ीं जांच एजेंसियां, नई व्यवस्था की जरूरत

दिल्ली के बहुचर्चित शराब घोटाले में सीबीआई की राऊज एवेन्यू कोर्ट की ओर से पूर्व मुख्यमंत्री एवं आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल और पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया समेत सभी 23 आरोपितों को बरी किया जाना जहां इन दोनों नेताओं और उनकी पार्टी के लिए एक बहुत बड़ी जीत है, वहीं जांच एजेंसी के साथ-साथ भाजपा के लिए बड़ा झटका है। अदालत ने यह पाया कि पूरे मामले में कोई साजिश नहीं थी और सीबीआई ने केवल अनुमान के आधार पर षड्यंत्र की कहानी गढ़ी। विशेष जज ने अपने फैसले में यह भी कहा कि मैं पहली बार ऐसी चार्जशीट देख रहा हूं, जिसमें इतनी अधिक खामियां हैं। उन्होंने लापरवाह अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की भी बात कही।

जब केजरवाल सरकार नई आबकारी नीति लाई थी तो कांग्रेस-भाजपा ने इसे घोटाले का नाम दिया। इसके बाद उपराज्यपाल की पहल पर मामला दर्ज हुआ और जांच सीबीआई को सौंपी गई। इस दौरान ऐसे आरोप उछले कि आबकारी नीति के जरिये कुछ लोगों को अनुचित लाभ पहुंचाने से दिल्ली सरकार को दो हजार करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान हुआ।

इस मामले में सीबीआई के बाद ईडी ने भी दखल दिया, लेकिन सीबीआई का केस खारिज होने के बाद ईडी के मामले के भी खारिज होने के आसार हैं। इन दोनों जांच एजेंसियों ने इस कथित घोटाले को लेकर पर्याप्त साक्ष्य होने के दावे किए और फिर एक के बाद एक कई लोगों को गिरफ्तार किया। प्रमुख लोगों में पहले मनीष सिसोदिया गिरफ्तार हुए और फिर अरविंद केजरीवाल। दोनों को सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिल सकी। हालांकि सीबीआई केजरीवाल, सिसोदिया और अन्य को बरी करने के फैसले के खिलाफ दिल्ली हाई कोर्ट गई है, पर राऊज एवेन्यू कोर्ट के जज ने उसके खिलाफ जैसी टिप्पणियां की हैं, उनसे यह संदेह होता है कि कहीं सीबीआई ने मनमाने तरीके से तो जांच नहीं की? यही सवाल ईडी को लेकर भी है। ध्यान रहे कि न जाने कितने ऐसे मामले हैं, जिनमें सीबीआई प्रिवेंशन ऑफ करप्शन एक्ट और ईडी प्रिवेंशन ऑफ मनी लांड्रिंग एक्ट के तहत मिली शक्तियों के सहारे नेताओं, कारोबारियों समेत अन्य अनेक लोगों को घपले-घोटालों के आरोप में गिरफ्तार कर लेती है और फिर उनमें से अधिकांश साक्ष्य के अभाव में बरी हो जाते हैं, लेकिन जब तक ऐसा होता है, तब तक संबंधित व्यक्ति की प्रतिष्ठा पर आंच आ चुकी होती है और उसकी भरपाई नहीं हो पाती।

इसीलिए राऊज एवेन्यू कोर्ट के जज ने कहा कि जब किसी की व्यक्तिगत स्वतंत्रता बाधित हो जाती है तो उसके बरी होने के बाद भी वह सार्थक रूप से बहाल नहीं होती और अन्यायपूर्ण हिरासत से हुई क्षति की पूर्ति भी नहीं हो पाती। वास्तव में ऐसे लोगों को आर्थिक के साथ सामाजिक नुकसान भी उठाना पड़ता है। नेता भी नुकसान उठाते हैं, लेकिन बरी होने के बाद वे लोगों की हमदर्दी हासिल कर राजनीतिक लाभ लेने की कोशिश करते हैं।

उन्हें यह प्रचारित करने में आसानी होती है कि वे राजनीतिक बदले की कार्रवाई का शिकार हुए। इस पर हैरानी नहीं कि केजरीवाल ने ऐसा कहना शुरू कर दिया है। उन्हें नई राजनीतिक ऊर्जा मिली है और इसका असर आने वाले दिनों में पंजाब, गुजरात और दिल्ली की राजनीति में दिख सकता है। चूंकि आम आदमी पार्टी कांग्रेस के वोट में सेंधमारी करती है, इसलिए उसका चिंतित होना स्वाभाविक है।

अब यह आम बात है कि घपले-घोटालों के कई मामलों में सीबीआई के साथ ईडी भी जांच शुरू कर देती है। जब ईडी किसी को गिरफ्तार करती है तो उसे जमानत मिलना कठिन हो जाता है। कई बार जमानत इसलिए नहीं मिलती, क्योंकि सीबीआई और ईडी की ओर से इस पर जोर दिया जाता है कि जेल से बाहर आने पर आरोपित गवाहों को प्रभावित कर सकता है। कहना कठिन है कि राऊज एवेन्यू कोर्ट के फैसले के खिलाफ हाई कोर्ट गई सीबीआई को क्या हासिल होगा, लेकिन जब तक हाई कोर्ट भिन्न निर्णय नहीं देता, तब तक भाजपा एवं मोदी सरकार को केजरीवाल और उनके साथियों की आलोचना का सामना करना होगा।

इसी के साथ सीबीआई और ईडी की भी किरकिरी होती रहेगी। आगे जो भी हो, यह मानने के अच्छे-भले कारण हैं कि नेताओं के मामलों में राजनीतिक द्वेष के तहत भी कार्रवाई होती है और जांच एजेंसियों का दुरुपयोग होता है। इसी कारण एक बार सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई को पिंजरे का तोता कहा था। एक ओर नेताओं-नौकरशाहों के भ्रष्टाचार के जिन मामलों की जांच सीबीआई या ईडी की ओर से की जाती है, उनमें से अधिकांश अदालत में ठहर नहीं पाते और दूसरी ओर यह देखने में आ रहा है कि उनके भ्रष्टाचार के मामले कम होने का नाम नहीं ले रहे हैं। यह समझना कठिन है कि जब सीबीआई अथवा ईडी किसी को गिरफ्तार करती हैं तो जो अदालतें उसे जेल भेजती हैं, रिमांड पर देती हैं या फिर जमानत देने से मना करती हैं, वही उन्हें बरी करने के नतीजे पर कैसे पहुंच जाती हैं? जेल भेजने का काम तो अदालतें ही करती हैं, न कि जांच एजेंसियां।

पिछले दिनों एनसीईआरटी की ओर से आठवीं की सामाजिक विज्ञान की पुस्तक में न्यायपालिका के भ्रष्टाचार पर एक अध्याय को शामिल करने पर उसे सुप्रीम कोर्ट की फटकार का सामना करना पड़ा। सुप्रीम कोर्ट ने एनसीईआरटी से इस पुस्तक को प्रतिबंधित भी करा दिया। इससे इनकार नहीं कि न्यायपालिका में जब-तब भ्रष्टाचार के मामले सामने आते हैं, पर नेताओं और नौकरशाहों के भ्रष्टाचार के मामलों की तो गिनती करना ही कठिन है। इसके चलते सरकार के इस संकल्प पर सवाल उठता है कि वह शासन-प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के लिए प्रतिबद्ध है।

अभियान

होलिका दहन की परिक्रमा : आस्था, ऊर्जा और आत्मशुद्धि का सनातन अनुष्ठान

सनातन परंपरा में प्रत्येक पर्व केवल उत्सव का अवसर नहीं होता, बल्कि वह आध्यात्मिक शुद्धि, आंतरिक जागरण और जीवन के संतुलन का माध्यम भी होता है। होली का पावन पर्व भी इसी परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। हिंदू धर्म में होलिका दहन को बुराई पर अच्छाई की विजय, अहंकार पर आस्था की जीत और नकारात्मकता पर सकारात्मक ऊर्जा के उदय का प्रतीक माना गया है। इस दिन अग्नि प्रज्वलित कर उसकी परिक्रमा करना केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक विज्ञान भी है, जो व्यक्ति के मन, शरीर और आत्मा को शुद्ध करने का माध्यम बनता है।

होलिका दहन की परंपरा का मूल आधार प्राचीन पौराणिक कथा से जुड़ा है, जिसमें भक्त प्रह्लाद की अटूट भक्ति और सत्य के प्रति उनकी निष्ठा ने उन्हें हर संकट से बचाया। जब अत्याचारी राजा हिरण्यकश्यप ने अपने पुत्र प्रह्लाद को मारने के लिए अपनी बहन होलिका की सहायता ली, तब होलिका अग्नि में बैठी, लेकिन ईश्वर की कृपा से वह स्वयं जल गई और प्रह्लाद सुरक्षित बच गए। यह घटना इस सत्य का प्रतीक है कि जब व्यक्ति का मन सच्चाई और ईश्वर की भक्ति से जुड़ा होता है, तब कोई भी नकारात्मक शक्ति उसे पराजित नहीं कर सकती। इसी कारण होलिका दहन की अग्नि को बुराई के अंत और नई सकारात्मक शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। होलिका दहन के बाद अग्नि की परिक्रमा करने की परंपरा अत्यंत प्राचीन और गहन आध्यात्मिक महत्व से जुड़ी हुई है। परिक्रमा का अर्थ केवल अग्नि के चारों ओर घूमना नहीं, बल्कि यह अपने जीवन को ईश्वर और सकारात्मक ऊर्जा के केंद्र के चारों ओर समर्पित करने का प्रतीक है। जब व्यक्ति अग्नि की परिक्रमा करता है, तो वह प्रतीकात्मक रूप से अपनी नकारात्मक भावनाओं, भय, क्रोध, अहंकार और दुर्भावनाओं को अग्नि में समर्पित करता है और बदले में शुद्धता, साहस, आत्मविश्वास और सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करता है। शास्त्रों में परिक्रमा की संख्या का विशेष महत्व बताया गया है। सामान्यतः तीन या सात बार परिक्रमा करना शुभ माना जाता है। तीन परिक्रमा ब्रह्मांड की मूल शक्तियों—ब्रह्मा, विष्णु और महेश—के प्रति सम्मान का प्रतीक मानी जाती है। यह सृष्टि, पालन और संहार के संतुलन को दर्शाती है, जो जीवन के चक्र का आधार है। सात परिक्रमा का संबंध शरीर के सात ऊर्जा केंद्रों अर्थात चक्रों से माना जाता है। यह माना जाता है कि जब व्यक्ति श्रद्धा और एकाग्रता के साथ सात परिक्रमा करता है, तो उसके शरीर और मन के ऊर्जा केंद्र संतुलित होते हैं, जिससे मानसिक शांति, आत्मबल और सकारात्मक सोच का विकास होता है। होलिका दहन की अग्नि को अत्यंत पवित्र और ऊर्जावान माना गया है। अग्नि स्वयं पंचतत्वों में से एक है और यह शुद्धि का सबसे शक्तिशाली माध्यम मानी जाती है। जब व्यक्ति अग्नि के पास जाता है और उसकी परिक्रमा करता है, तो वह उस दिव्य ऊर्जा के संपर्क में आता है, जो उसके भीतर की नकारात्मकता को समाप्त कर सकती है। यह प्रक्रिया केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक रूप से भी अत्यंत प्रभावशाली होती है। जब व्यक्ति श्रद्धा और विश्वास के साथ इस अनुष्ठान को करता है, तो उसके भीतर आत्मविश्वास और सकारात्मकता का संचार होता है।

परिक्रमा करते समय मन में ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का भाव रखना अत्यंत आवश्यक माना गया है। यह समय केवल मांगने का नहीं, बल्कि धन्यवाद देने का भी होता है। जब व्यक्ति अपने जीवन में मिले सुख, सुरक्षा और अवसरों के लिए ईश्वर का आभार व्यक्त करता है, तो उसके भीतर संतोष और शांति की भावना विकसित होती है। यही संतोष जीवन में स्थिरता और संतुलन का आधार बनता है।

होलिका दहन के साथ दान और सेवा का भी विशेष महत्व है। इस दिन नई फसल के अनाज, गेहूं की बालियां या चने अग्नि में अर्पित किए जाते हैं। यह परंपरा प्रकृति और अन्नदाता के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त करने का प्रतीक है। यह हमें यह भी सिखाती है कि जीवन में जो कुछ भी हमें प्राप्त हुआ है, वह केवल हमारे प्रयास का परिणाम नहीं, बल्कि ईश्वर और प्रकृति की कृपा का भी फल है। इस दिन गरीबों और जरूरतमंदों को दान देना अत्यंत पुण्यकारी माना जाता है, क्योंकि यह सामाजिक संतुलन और मानवीय करुणा का प्रतीक है। ज्योतिषीय दृष्टि से भी होलिका दहन की परिक्रमा का विशेष महत्व बताया गया है। यह माना जाता है कि इस दिन अग्नि की परिक्रमा करने से ग्रहों के अशुभ प्रभाव कम होते हैं और जीवन में आने वाली बाधाएं दूर होती हैं। अग्नि की ऊर्जा व्यक्ति के आभामंडल को शुद्ध करती है और नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त करती है। इससे व्यक्ति के जीवन में नई संभावनाओं के द्वार खुलते हैं और मानसिक स्पष्टता प्राप्त होती है।

परिक्रमा की सही विधि का पालन करना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। परिक्रमा शुरू करने से पहले व्यक्ति को अपने हाथ में जल, अक्षत और फूल लेकर ईश्वर का ध्यान करना चाहिए। यह प्रक्रिया मन को एकाग्र करती है और व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से तैयार करती है। परिक्रमा हमेशा घड़ी की दिशा में करनी चाहिए, क्योंकि यह दिशा ब्रह्मांड की प्राकृतिक ऊर्जा प्रवाह के अनुरूप मानी जाती है। परिक्रमा करते समय सरल मंत्रों का जाप करना मन को शांत और स्थिर बनाता है। परिक्रमा पूरी होने के बाद अग्नि देव को प्रणाम करना और अपने परिवार की सुख, शांति और समृद्धि के लिए प्रार्थना करना अत्यंत शुभ माना जाता है। यह प्रक्रिया व्यक्ति को अपने जीवन के उद्देश्य और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करती है। यह हमें यह भी सिखाती है कि जीवन में केवल भौतिक सफलता ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि मानसिक शांति और आध्यात्मिक संतुलन भी उतना ही आवश्यक है।

होलिका दहन की परिक्रमा का एक महत्वपूर्ण सामाजिक पक्ष भी है। यह परंपरा लोगों को एक साथ लाती है और सामूहिकता की भावना को मजबूत करती है। जब पूरा समाज एक साथ इस अनुष्ठान में भाग लेता है, तो आपसी संबंध मजबूत होते हैं और सामाजिक एकता का विकास होता है। यह हमें यह याद दिलाता है कि हम केवल व्यक्तिगत अस्तित्व नहीं हैं, बल्कि एक बड़े सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने का हिस्सा हैं।

आधुनिक जीवन की व्यस्तता और तनाव के बीच यह परंपरा हमें अपने भीतर झांकने और आत्मशुद्धि का अवसर प्रदान करती है। यह हमें यह समझने में मदद करती है कि जीवन में नकारात्मकता और कठिनाइयां अस्थायी होती हैं, और विश्वास, धैर्य और सकारात्मक सोच के माध्यम से उन्हें दूर किया जा सकता है।

अंततः, होलिका दहन की परिक्रमा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, कृतज्ञता, सामाजिक एकता और आध्यात्मिक जागरण का प्रतीक है। यह हमें यह सिखाती है कि जीवन में सकारात्मकता, श्रद्धा और संतुलन बनाए रखना ही सच्ची सफलता का मार्ग है। जब हम श्रद्धा और विश्वास के साथ इस परंपरा का पालन करते हैं, तो यह न केवल हमारे जीवन को आध्यात्मिक रूप से समृद्ध करती है, बल्कि हमें मानसिक शांति, आत्मबल और जीवन में आगे बढ़ने की नई प्रेरणा भी प्रदान करती है। यही इस पवित्र परंपरा का वास्तविक उद्देश्य और सबसे बड़ा महत्व है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

गुजरात बनेगा भारत का 'गेटवे टू सिलिकॉन' : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गांधीनगर में 'गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026' का शानदार शुभारंभ किया

▸▸ केंद्रीय आईटी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया और देश-विदेश के सेमीकंडक्टर इंडस्ट्रीज के दिग्गजों की विशेष उपस्थिति

▸▸ गुजरात नीतिगत स्थिरता, पारदर्शिता, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस तथा विकास के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ सेमीकंडक्टर और चिप मैन्युफैक्चरिंग में तेजी से आगे बढ़ रहा है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री सहित महानुभावों ने राज्य की नई 'साइंस, टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन-एसटीआई 2026-31' नीति का अनावरण किया

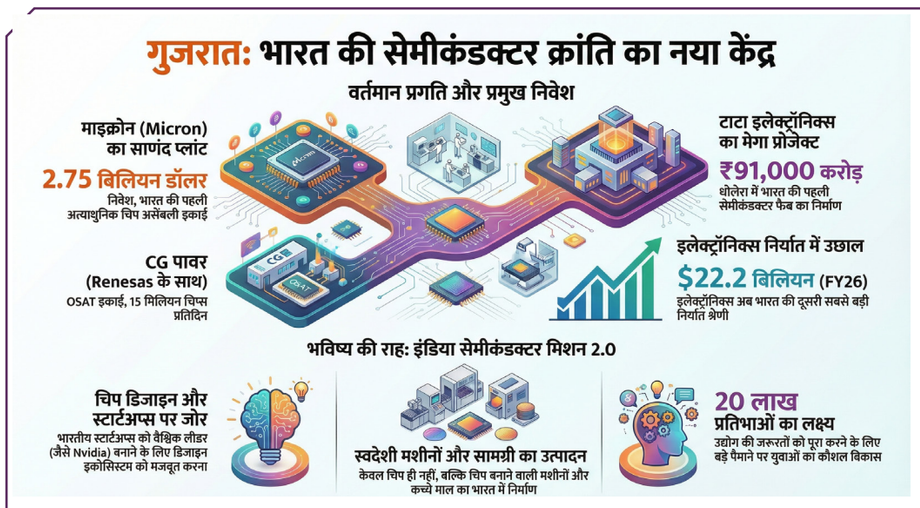

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र **जीएनएस)**। पटेल ने रविवार को गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर में गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026 का उद्घाटन करते हुए कहा कि गुजरात नीतिगत स्थिरता, पारदर्शिता, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस और विकास के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ सेमीकंडक्टर और चिप मैन्युफैक्चरिंग में तेजी से आगे बढ़ रहा है। यह कॉन्फ्रेंस देश के ग्रोथ इंजन गुजरात को टेक इंजन बनाने का स्पष्ट संकेत देती है।

इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत अब हार्डवेयर के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान सशक्त कर रहा है और 'इंडिया इज रेडी, इंडिया इज रिलायबल एंड इंडिया डिलीवर्स' का जो विश्वास उन्होंने दिलाया है, उसे इस गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस के जरिए पूरा करने की मंशा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'विकसित भारत@2047' और 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को साकार करने की दिशा में गुजरात ने एक और ऐतिहासिक कदम उठाया है। इसके अंतर्गत गांधीनगर के महात्मा मंदिर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की अध्यक्षता में 'गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026' का भव्य प्रारंभ किया गया।

इस गरिमापूर्ण अवसर पर केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया सहित उद्योग जगत के दिग्गज विशेष रूप से मौजूद रहे। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन से प्रेरित और राज्य सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की ओर से आयोजित इस ग्लोबल कॉन्फ्रेंस की थीम 'गुजरात : भारत का सिलिकॉन गेटवे' रखी गई है, जो हाई-टेक चिप निर्माताओं और स्थानीय उद्योगों के बीच रणनीतिक सहयोग को बढ़ावा देगी।

मुख्यमंत्री ने गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026 को 'राइट जॉब एट राइट टाइम' बताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों साणंद में माइक्रोन प्लांट की शुरुआत से देश के लिए टेक्नोलॉजिकल युग की क्रांति का शंखनाद हुआ है।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि इस ऐतिहासिक घटना के तुरंत बाद शुरू हो रही यह गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस राज्य के सेमीकंडक्टर सेक्टर इकोसिस्टम की तैयारी को मजबूत करने और वैश्विक साझेदारों को राज्य में आकर्षित करने के साथ ही रिसर्च, इनोवेशन और सप्लाई चेन के लोकलाइजेशन के जरिए आत्मनिर्भर भारत का विजन पूरा करेगी।

मुख्यमंत्री ने सेमीकंडक्टर इंडस्ट्रीज के कप्तानों और निवेशकों को धोलेरा और साणंद में चिप मैन्युफैक्चरिंग एवं गिफ्ट सिटी में डिजाइन एवं फाइनेंस के समन्वय से राज्य में मौजूद एंड-टू-एंड एक्सक्लुजिव इकोसिस्टम के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि धोलेरा विशेष निवेश क्षेत्र (एसआईआर) अब एक ब्लूप्रिंट नहीं रहा, बल्कि भारत की सेमीकॉन सिटी बनने जा रहा है। धोलेरा और साणंद में सेमीकंडक्टर सेक्टर के लिए भविष्य की आवश्यकतानुसार क्वालिटी इंफ्रास्ट्रक्चर, प्लग एंड प्ले फैसिलिटी और लॉजिस्टिक्स व्यवस्थाओं को आधुनिक बनाया है।

श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में गुजरात सेक्टर स्पेसिफिक नीति निर्माण के जरिए पॉलिसी ड्रिवन स्टेट, टेक्नोलॉजी-आधारित विकास को प्राथमिकता और ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के कारण ग्लोबल कंपनियों और निवेशकों के लिए निवेश की पहली पसंद बन गया है।

उन्होंने कहा कि दुनिया के उद्योग जब कार्बन फुटप्रिंट और कार्बन टैक्स को लेकर चिंता में है, तब गुजरात पावर सरप्लस स्टेट और रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर में अग्रणी रहकर ग्रीन ग्रोथ को प्राथमिकता देता है। गुजरात ऐसे सुदृढ़ इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ सेमीकॉन इंडस्ट्रीज के लिए युवा स्किल्ड वर्कफोस तैयार करने की दिशा में भी प्रतिबद्ध है और आईआईटी-गांधीनगर में इस उद्देश्य से 'समर्थ' प्रोजेक्ट के अंतर्गत नैनो फैब्रिकेशन लैब का निर्माण हो रहा है।

मुख्यमंत्री ने सेमीकॉन सेक्टर के निवेशकों को विश्वास दिलाया कि गुजरात सेमीकॉन सेक्टर में नए निवेश से प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर और विकसित भारत@2047 के संकल्प को चिप से चैम्पियन तक के सफर के जरिए चरितार्थ करने में आगे रहेगा और गुजरात में उनका निवेश सस्टेनेबल डेवलपमेंट का बेंचमार्क स्थापित करेगा।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी

▸▸ गुजरात देश में सर्वाधिक 'रिटर्न ऑन इन्वेस्टमेंट' की गारंटी देने वाला राज्य है

▸▸ गुजरात निवेशकों को निवेश के साथ-साथ सुरक्षित भविष्य की भी गारंटी देता है

▸▸ देश की केवल 5 फीसदी आबादी और 6 फीसदी भौगोलिक क्षेत्रफल वाले गुजरात की भारत के कुल मैन्युफैक्चरिंग आउटपुट में 18 फीसदी, जीडीपी में 8 फीसदी, निर्यात में 30 फीसदी और कुल कार्गो हैंडलिंग में 40 फीसदी से अधिक की हिस्सेदारी

केंद्रीय मंत्री इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

▸▸ साणंद में माइक्रोन के पहले प्लांट की शुरुआत के साथ भारत ने दुनिया के सेमीकंडक्टर नक्शे पर विशेष स्थान प्राप्त किया

▸▸ भारत केवल चिप्स ही नहीं, बल्कि चिप बनाने की मशीनरी, मटेरियल और टेस्टिंग इकोसिस्टम भी विकसित करेगा

▸▸ सेमीकंडक्टर उद्योग में वैश्विक स्तर पर 20 लाख विशेषज्ञों की कमी होगी, जिसे भारत पूरा करेगा

▸▸ गुजरात के पास अतिरिक्त बिजली और क्लीन एनर्जी उपलब्ध होने के कारण राज्य में डेटा सेंटर्स स्थापित करने का बढ़िया अवसर

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात का साणंद भारत का नया सिलिकॉन वैली बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

उन्होंने कहा कि गुजरात आज निवेशकों की पहली पसंद बन रहा है। गुजरात देश में सर्वाधिक 'रिटर्न ऑन इन्वेस्टमेंट' यानी निवेश पर प्रतिफल की गारंटी देने वाला राज्य है। गुजरात राज्य केवल निवेश के लिए नहीं है, बल्कि सुरक्षित भविष्य की गारंटी है। श्री संघवी ने निवेशकों को आश्वस्त करते हुए कहा कि गुजरात में आज किया गया निवेश आने वाली 10 पीढ़ियों तक सुरक्षित रहेगा।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने गुजरात की आर्थिक क्षमता के आंकड़े रखते हुए कहा कि गुजरात के पास देश की केवल 5 फीसदी आबादी और 6 फीसदी भौगोलिक क्षेत्रफल है, इसके बावजूद भारत के कुल मैन्युफैक्चरिंग आउटपुट में गुजरात का योगदान 18 फीसदी से अधिक है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में गुजरात की हिस्सेदारी 8 फीसदी से अधिक है। देश के कुल निर्यात में 30 फीसदी से अधिक और कुल कार्गो हैंडलिंग में गुजरात का हिस्सा 40 फीसदी से अधिक है।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्षों से बनी हुई राजनीतिक और नीतिगत स्थिरता गुजरात की सबसे बड़ी ताकत है। गुजरात सरकार हमेशा निवेशकों की छोटी से छोटी समस्याओं को सुनकर उसका समाधान करने की भावना के साथ काम करती है। सेमीकंडक्टर क्षेत्र में गुजरात के युवा वैश्विक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त कर तैयार हुए हैं और वे अन्य देशों के युवाओं के मुकाबले अधिक परिश्रमी सिद्ध हुए हैं।

केंद्रीय मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

इस अवसर पर केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि कल का दिन भारत के सेमीकंडक्टर सफर में एक ऐतिहासिक दिन था। साणंद में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों से माइक्रोन के पहले प्लांट की शुरुआत के साथ भारत ने दुनिया के सेमीकंडक्टर नक्शे पर एक विशेष स्थान प्राप्त किया है। इस सफलता के बाद सरकार अब 'सेमीकॉन 2.0' लॉन्च करने जा रही है, जिसका मुख्य उद्देश्य भारत को न केवल मैन्युफैक्चरिंग, बल्कि डिजाइन, मशीनरी और टैलेंट का वैश्विक केंद्र बनाना है। प्रधानमंत्री के विजन और क्रियान्वयन पर जोर देते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भारत ने अतीत में सेमीकंडक्टर राष्ट्र बनने का सपना देखा था, जिस तरह से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इस क्षेत्र में एक स्पष्ट नीति बनाकर उसका सटीकता के साथ क्रियान्वयन किया गया, उसने इस सपने को हकीकत में बदल दिया है। जब वर्ष 2021 में इस संबंध में पहला प्रेजेंटेशन दिया गया था, तब प्रधानमंत्री ने 45 मिनट के बजाय 3 घंटे तक हर मामले पर गहराई से चर्चा की थी, जो इस मिशन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दिखाता है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि 'दौड़ने से पहले चलना सीखें' के सिद्धांत के साथ सेमीकॉन 1.0 सफल होने के बाद, अब सेमीकॉन 2.0 के अंतर्गत कुछ प्राथमिकताएं निर्धारित की गई हैं, जिसमें डिजाइन इकोसिस्टम के जरिए क्वालकॉम, ब्रॉडकॉम और एनवीडिया जैसी कंपनियां देश में ही तैयार हो, इसके लिए डीप-टेक स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन दिया जाएगा। भारत न केवल चिप्स, बल्कि चिप बनाने वाली मशीनरी, मटेरियल और टेस्टिंग इकोसिस्टम भी विकसित करेगा। जापान के मॉडल से सीख लेकर, भारत अगले 20 वर्षों के विजन के साथ यह मजबूत नींव बना रहा है।

वैश्विक टैलेंट हब के बारे में केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सेमीकंडक्टर उद्योग में वैश्विक स्तर पर 20 लाख विशेषज्ञों की कमी होने वाली है, जिसे भारत पूरा करेगा। भारत ने 10 साल में 85 हजार इंजीनियर तैयार करने का लक्ष्य केवल चार वर्ष में ही हासिल कर लिया है। अभी देश की 315 यूनिवर्सिटियों में विद्यार्थी वास्तविक चिप्स डिजाइन कर रहे हैं। अब इस नेटवर्क को 315 से बढ़ाकर 500 यूनिवर्सिटी तक ले जाया जाएगा, ताकि हर राज्य के युवाओं को इस हाई-टेक क्षेत्र में रोजगार मिल सके।

केंद्रीय मंत्री श्री वैष्णव ने आगे कहा कि इंफ्रास्ट्रक्चर के स्तर पर 250 बिलियन डॉलर और डीप-टेक वीसी फंडिंग में 17 बिलियन डॉलर के निवेश की प्रतिबद्धता व्यक्त की गई है। वर्ष 2047 तक टैक्स इंसेंटिव्स का आश्वासन देते हुए सरकार ने नीतिगत स्थिरता दी है, जिससे भारत की आईटी इंडस्ट्री अब सॉफ्टवेयर सर्विसेज से आगे बढ़कर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई)-आधारित सर्विसेज में दुनिया का नेतृत्व करेगी।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने बजट में 2047 तक के प्रोत्साहन देकर डेटा सेंटर्स के लिए एक मजबूत नींव रखी है। चूंकि गुजरात के पास अतिरिक्त बिजली और क्लीन एनर्जी उपलब्ध है, इसलिए राज्य सरकार के पास डेटा सेंटर्स स्थापित करने का बढ़िया अवसर है। यह कदम भारत को दुनिया के डेटा हब के रूप में स्थापित करने और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विजन को साकार करने में अहम भूमिका निभाएगा। केंद्रीय मंत्री ने आगे कहा कि इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर का अभूतपूर्व विकास हुआ है, जो पिछले 10 वर्षों में 2 लाख करोड़ रुपए से बढ़कर 12 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच गया है। अभी इस उद्योग में 25 लाख लोगों को रोजगार प्राप्त है और यह 20 फीसदी से अधिक के कंपाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट (सीएजीआर) के साथ लगातार आगे बढ़ रहा है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ यह कॉन्फ्रेंस देश के ग्रोथ इंजन गुजरात को टेक इंजन बनाने का संकेत है

▸▸ धोलेरा एसआईआर केवल ब्लूप्रिंट नहीं, बल्कि अब देश की सेमीकॉन सिटी बनने को तैयार है

▸▸ हम सेमीकंडक्टर सेक्टर के लिए आवश्यकतानुसार इंफ्रास्ट्रक्चर और लॉजिस्टिक्स के साथ-साथ युवा स्किल्ड वर्कफोर्स भी तैयार कर रहे हैं

▸▸ सेमीकॉन सेक्टर में नए निवेश के साथ आत्मनिर्भर और विकसित भारत@2047 के प्रधानमंत्री के संकल्प को चिप से चैम्पियन तक के सफर से चरितार्थ करने का गुजरात का लक्ष्य है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया

इस अवसर पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुन मोढवाडिया ने कहा कि जब दुनिया कोविड-19 की चुनौतियों से जूझ रही थी, तब कुछ सेक्टरों की सप्लाई चेन विशेष रूप से प्रभावित हो गई थी, जिनमें सेमीकंडक्टर सेक्टर महत्वपूर्ण है। सेमीकंडक्टर का उत्पादन बंद होने से दुनिया के कई उद्योगों पर बुरा प्रभाव पड़ा। यह एक बड़ी चुनौती थी, इस चुनौती को एक अवसर मानते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश को सेमीकंडक्टर हब बनाने का निर्णय किया। इस परिकल्पना को साकार करने के लिए कल यानी शनिवार को प्रधानमंत्री के करकमलों से साणंद में देश के पहले माइक्रोन एटीएमपी प्लांट का उद्घाटन हुआ। हमें इस क्षेत्र में अभी बहुत कुछ करना बाकी है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात नॉलेज हब बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इस अवसर पर मुख्य सचिव श्री एम.के. दास ने कहा कि शनिवार को हम सभी एक ऐतिहासिक पल के गवाह बने, जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सेमीकंडक्टर के निवेश का उद्घाटन किया। इस प्रोजेक्ट के साथ गुजरात अब सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम का एक मजबूत केंद्र बन गया है। उन्होंने कहा कि धोलेरा एसआईआर दुनिया के सबसे बड़े और अत्याधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर वाले क्षेत्रों में से एक है, जो हाई-टेक मैन्युफैक्चरिंग के लिए तैयार है। इसके अलावा, गिफ्ट सिटी निवेशकों के लिए अभूतपूर्व वित्तीय ढांचा प्रदान करता है, जो गुजरात को वैश्विक स्तर पर टेक्नोलॉजी और उद्योग के लिए एक आदर्श राज्य बनाता है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की सचिव श्रीमती पी. भारती ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'आत्मनिर्भर भारत' के स्वप्न को साकार करने के लिए भारत अब केवल टेक्नोलॉजी का बाजार ही नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण निर्माता बनने की ओर आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात भविष्य का इंतजार नहीं करता, बल्कि उसका निर्माण कर रहा है। उन्होंने कहा कि यह कॉन्फ्रेंस केवल एक समारोह नहीं, अपितु सेमीकंडक्टर क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अग्रणी बनने की गुजरात की मजबूत प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस कॉन्फ्रेंस में राज्य में सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम को और मजबूत करने के लिए वैश्विक स्तर के दिग्गजों ने हिस्सा लिया। कॉन्फ्रेंस के तहत आयोजित थीमैटिक पैनल्स में मैन्युफैक्चरिंग, इंफ्रास्ट्रक्चर, फाइनेंस, रिसर्च एंड डेवलपमेंट और फ्यूचर स्किल्स पर विशेष चर्चा की गई। इसके अलावा, जापान और ताइवान जैसे देशों के साथ अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने के लिए 'कंट्री राउंडटेबल' का आयोजन भी किया गया। समारोह में उद्योग एवं खान विभाग की अपर मुख्य सचिव सुश्री ममता वर्मा, उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप, धोलेरा एसआईआर के सीईओ श्री कुलदीप आर्य, गुजरात स्टेट इलेक्ट्रॉनिक्स मिशन की मिशन डायरेक्टर सुश्री नेहा कुमारी सहित आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योगों से जुड़े कई मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ), प्रबंध निदेशक (एमडी), शोधकर्ता, नवोन्मेषक, प्रतिनिधिगण और विद्यार्थी मौजूद रहे।

भारत के औद्योगिक इतिहास में ऐतिहासिक दिन: पहला सेमीकंडक्टर प्लांट राष्ट्र को समर्पित

जीएनएस)। गुजरात को रेलवे क्षेत्र में रिकॉर्ड 17,366 करोड़ का बजट का आवंटन

माननीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिकी एवं

सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव माननीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने 28 फरवरी और 01 मार्च 2026 को गुजरात का दौरा किया।

गांधीनगर कैपिटल में आयोजित गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026 में मीडिया को संबोधित किया। इस दौरान माननीय मंत्रीजी ने अपने संबोधन में कहा कि माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कल भारत के औद्योगिक इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ते हुए देश के पहले सेमीकंडक्टर प्लांट का उद्घाटन किया। देश के समक्ष भारत में सेमीकंडक्टर उद्योग स्थापित करने का जो संकल्प रखा गया था, वह आज साकार हुआ है।

यह केवल शुरुआत है। स्वीकृत 10 सेमीकंडक्टर प्लांट्स में से चार का उद्घाटन एवं उत्पादन वर्ष 2026 में प्रस्तावित है, जिनमें से एक का शुभारंभ हो चुका है और तीन अन्य इस वर्ष प्रारंभ होंगे। अन्य परियोजनाओं पर भी तीव्र गति से कार्य प्रगति पर है।

धोलेरा में टाटा फैब सहित गुजरात में विकसित हो रहा सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम देश के लिए मील का पत्थर सिद्ध होगा। इस दिशा में गुजरात सरकार के नेतृत्व में किए जा रहे प्रयासों के लिए माननीय मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल का विशेष आभार व्यक्त किया गया।

गुजरात में रेलवे विकास को रिकॉर्ड बजट, अभूतपूर्व निवेश

रेलवे क्षेत्र में भी गुजरात को इस वर्ष रिकॉर्ड 17,366 करोड़ रुपये का बजट प्रदान किया गया है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2009-14 के दौरान राज्य को मात्र 589 करोड़ रुपये का वार्षिक बजट मिलता था।

वर्तमान में गुजरात में कुल 1,28,748 करोड़ रुपये के रेलवे निवेश पर कार्य जारी है। राज्य के 87 रेलवे स्टेशनों का व्यापक पुनर्विकास किया जा रहा है, जिनमें से 21 स्टेशन पूर्ण हो चुके हैं। अहमदाबाद, साबरमती, सूरत, उधना और सोमनाथ सहित अनेक स्टेशनों पर तीव्र गति से कार्य प्रगति पर है।

बुलेट ट्रेन परियोजना में तीव्र प्रगति, 2027 में संचालन लक्ष्य

मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल परियोजना में भी उल्लेखनीय प्रगति हो रही है। परियोजना पूर्ण होने पर मुंबई से अहमदाबाद के बीच यात्रा मात्र 1 घंटा 57 मिनट में संभव होगी तथा ट्रेन की अधिकतम गति 350 किमी प्रति घंटा होगी।

हाल ही में जापान के प्रधानमंत्री कार्यालय के प्रतिनिधियों ने परियोजना का निरीक्षण कर कार्य की गुणवत्ता एवं प्रगति पर संतोष व्यक्त किया। इसके अतिरिक्त, माननीय प्रधानमंत्री द्वारा सात नई बुलेट ट्रेन परियोजनाओं को भी स्वीकृति प्रदान की गई है। समग्र रूप से, सेमीकंडक्टर, रेलवे, इलेक्ट्रॉनिक्स सहित विभिन्न क्षेत्रों में देश तीव्र गति से प्रगति कर रहा है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में भारत विकास के नए आयाम स्थापित कर रहा है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026 में हिस्सा लेने आए विभिन्न उद्योगकारों एवं निवेशकों के साथ वन-टू-वन बैठक

राज्य में मेमोरी मॉड्यूल फैसिलिटी, पावरचिप विनिर्माण, सेमीकंडक्टर के लिए आरएंडडी सेंटर और स्पेशलिटी केमिकल फैसिलिटी शुरू करने सहित कई मुद्दों पर हुआ विचार-विमर्श

जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने रविवार को गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर में 'गुजरात सेमीकनेक्ट कॉन्फ्रेंस 2026' का शानदार प्रारंभ किया। हाई-टेक चिप निर्माताओं और स्थानीय उद्योगों के बीच रणनीतिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए 'गुजरात – इंडियाज गेटवे टू सिलिकॉन' विषय के साथ राज्य सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के तत्वावधान में इस दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया है।

इस कॉन्फ्रेंस में हिस्सा लेने के लिए आए विभिन्न उद्योग लीडरों की मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ हुई वन-टू-वन बैठक के दौरान उन्होंने सेमीकॉन सेक्टर में अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी), मेमोरी मॉड्यूल फैसिलिटी, पावरचिप विनिर्माण और स्पेशलिटी केमिकल फैसिलिटीज शुरू करने के लिए फलदायी विचार-विमर्श किया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुजरात में धोलेरा और साणंद सहित सेमीकंडक्टर इंडस्ट्रीज के सुदृढ़ इकोसिस्टम और राज्य सरकार के प्रोएक्टिव दृष्टिकोण के बारे में विस्तार से बताया। मुख्यमंत्री ने इस वन-टू-वन बैठक के अंतर्गत दीपक नाइट्रेट के प्रबंध निदेशक (एमडी) श्री मेघव मेहता, मलेशिया स्थित होतायी इलेक्ट्रॉनिक्स के चेयरमैन श्री दातो शेरी ली हंग लूंग, सूचि-आरओएचएम सेमीकॉन के एमडी श्री मोकोटो तेराडा और संस्थापक श्री अशोक मेहता, होरिबा इंडिया के श्री राजीव गौतम और एप्लाइड मटेरियल्स की मुख्य परिचालन अधिकारी (सीओओ) सुश्री राधिका विश्वनाथन से मुलाकात की। मुख्य सचिव श्री एम.के. दास, उद्योग विभाग की अपर मुख्य सचिव सुश्री ममता वर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार, उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की सचिव श्रीमती पी. भारती भी वन-टू-वन बैठक में उपस्थित रहे।

माननीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने अहमदाबाद -धोलेरा सेमी हाई स्पीड रेल कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट की समीक्षा

जीएनएस)। माननीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने आज (01.03.2026) पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद -धोलेरा सेमी हाई स्पीड रेल कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट के अंतर्गत सरखेज-धोलेरा डबलिंग के साथ नेशनल मरीटाइम हेरिटेज काम्प्लेक्स (NMHC) व धोलेरा एयरपोर्ट के बीच SPUR लाइन (134 किमी) के कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। इस दौरान पश्चिम रेलवे के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) श्री प्रदीप गुप्ता ने इस परियोजना की प्रगति के बारे माननीय रेल मंत्री को बतायाI इस दौरान श्री वेद प्रकाश, मंडल रेल प्रबंधक अहमदाबाद ,निर्माण विभाग एवं मंडल के अधिकारी मौजद थेI

यह परियोजना पूरे देश में सेमी हाई स्पीड रेल के एक प्रोटोटाइप के रूप में विकसित की जा रही है इसके अलावा यह अहमदाबाद और धोलेरा स्पेशल इन्वेस्टमेंट रीजन के बीच बेहतर और तेज़ कनेक्टिविटी प्रदान करने का कार्य भी करेगी।

सरखेज-धोलेरा सेमी हाई स्पीड रेल परियोजना सरखेज-धोलेरा ब्रॉड गेज सेक्शन पर 1676 मिमी ब्रॉड गेज पर विकसित की जाने वाली विश्व की पहली सेमी हाई स्पीड रेल परियोजना प्रणाली होगी, जिसकी अधिकतम संभावित गति 220 किमी/घंटा होगी।

मिश्रित यातायात (Mixed Traffic) प्रणाली – यह पहली SHSR प्रणाली होगी जिसमें मालगाड़ी 100 किमी/घंटा तथा यात्री ट्रेन 220 किमी/घंटा स्पीड से एक ही ट्रैक पर संचालित होंगी।

परियोजना का उपयोगिता

धोलेरा को सेमीकंडक्टर उद्योग और सोलर एनर्जी कंपोनेंट मैन्युफैक्चरिंग का प्रमुख हब बनाने में यह परियोजना महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

गुजरात देश में सौर ऊर्जा की स्थापित क्षमता वाले अग्रणी राज्यों में से एक है। सौर ऊर्जा क्षमता बढ़ाने की महत्वाकांक्षी योजनाओं के कारण सोलर कंपोनेंट्स की मांग लगातार बढ़ रही है। इस परियोजना के माध्यम से उद्योगों को घरेलू बाजार तक तेज और सुगम कनेक्टिविटी मिलेगी।

अहमदाबाद जैसे बड़े शहर से धोलेरा जैसे उभरते सैटेलाइट शहर तक कुशल मानव संसाधन का आवागमन आसान होगा। इससे उद्योगों को प्रशिक्षित और योग्य कार्यबल शीघ्र उपलब्ध होगा।

यह परियोजना प्रस्तावित लॉजिस्टिक्स ज़ोन और मल्टी-मोडल कनेक्टिविटी उद्योगों को सप्लायर्स और बाजारों से निर्बाध रूप से जोड़ेगी।

फॉर-लेन एक्सेस कंट्रोल्ड एक्सप्रेसवे, सेमी हाई स्पीड रेल और वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर जुड़ाव से घरेलू बाजार और निर्यात द्वार जैसे जवाहरलाल नेहरू पोर्ट तक त्वरित पहुंच सुनिश्चित होगी।

सरखेज–धोलेरा सेमी हाई स्पीड रेल परियोजना, उत्कृष्ट कनेक्टिविटी, कुशल मानव संसाधन और उन्नत लॉजिस्टिक्स के माध्यम से धोलेरा स्पेशल इन्वेस्टमेंट रीजन को सेमीकंडक्टर और सोलर मैन्युफैक्चरिंग का सशक्त औद्योगिक केंद्र बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

डुमस सी-फेस बनेगा सूरत की नई पहचान, समुद्र किनारे विकसित हो रहा विश्वस्तरीय पर्यटन और सांस्कृतिक केंद्र

जीएनएस)। सूरत। तेज़ी से आधुनिक महानगर के रूप में विकसित हो रहे सूरत को अब पर्यटन के क्षेत्र में एक नई और ऐतिहासिक सौगात मिलने जा रही है। शहर के प्रतिष्ठित समुद्री तट डुमस पर विकसित किया गया डुमस सी-फेस डेवलपमेंट प्रोजेक्ट का पहला चरण 8 मार्च को जनता के लिए समर्पित किया जाएगा। इस महत्वाकांक्षी परियोजना का उद्घाटन गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल द्वारा किए जाने की तैयारी पूरी कर ली गई है। यह परियोजना न केवल सूरत के पर्यटन मानचित्र को नया आयाम देगी, बल्कि शहर की सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों को भी नई गति प्रदान करेगी।

डुमस सी-फेस डेवलपमेंट प्रोजेक्ट को शहर के लिए एक लैंडमार्क प्रोजेक्ट के रूप में देखा जा रहा है, जिसकी परिकल्पना सूरत को विश्वस्तरीय समुद्री पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से की गई है। इस परियोजना को सूरत म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन द्वारा विकसित किया गया है, और इसके पहले चरण का निर्माण लगभग 12.86 हेक्टेयर क्षेत्र में 166.17 करोड़ रुपये की लागत से पूरा किया गया है। अधिकारियों के अनुसार, यह परियोजना केवल एक मनोरंजन स्थल नहीं होगी, बल्कि यह नागरिकों को प्रकृति के करीब लाने, स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने और शहर की सुंदरता को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करने का एक माध्यम बनेगी। इस परियोजना की शुरुआत दिसंबर 2025 में पूरी करने का लक्ष्य रखा गया था, लेकिन निर्माण कार्य में आई तकनीकी और प्रशासनिक चुनौतियों के कारण इसमें देरी हुई। पूर्व म्युनिसिपल कमिश्नर शालिनी अग्रवाल ने परियोजना की प्रगति की लगातार निगरानी की और निर्माण एजेंसी को समय पर कार्य पूरा करने के निर्देश दिए थे। उन्होंने कई बार साइट का दौरा कर कार्य की गुणवत्ता और गति की समीक्षा की और आवश्यकतानुसार सख्त रुख अपनाते हुए नोटिस भी जारी किए थे। प्रशासन की लगातार निगरानी और प्रयासों के परिणामस्वरूप अंततः परियोजना अपने अंतिम चरण में पहुंच गई और अब इसका उद्घाटन निर्धारित तिथि पर किया जाना सुनिश्चित हो गया है। शनिवार को परियोजना स्थल का अंतिम निरीक्षण किया गया, जिसमें शहर के मेयर दक्षेश मवानी, स्टैंडिंग कमेटी चेयरमैन राजन पटेल, म्युनिसिपल कमिश्नर एम. नागराजन और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने उपस्थित होकर तैयारियों का जायजा लिया। अधिकारियों ने स्थल पर उपलब्ध सुविधाओं, सुरक्षा व्यवस्था, पार्किंग, लाइटिंग और सार्वजनिक सुविधाओं का निरीक्षण किया और उद्घाटन कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आवश्यक निर्देश दिए।

डुमस सी-फेस डेवलपमेंट प्रोजेक्ट के तहत विकसित की गई सुविधाएं इसे देश के प्रमुख समुद्री पर्यटन स्थलों में शामिल करने की क्षमता रखती हैं। परियोजना के अंतर्गत लगभग 1 किलोमीटर लंबा मरीन-थीम आधारित साइकिल ट्रैक बनाया गया है, जहां नागरिक समुद्र के किनारे साइकिल चलाते हुए प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद ले सकेंगे। इसके साथ ही 650 मीटर लंबा प्रोमेनेड और लगभग 2 किलोमीटर लंबा वॉकवे तैयार किया गया है, जहां लोग सुबह और शाम की सैर कर सकेंगे। यह वॉकवे आधुनिक डिजाइन और सुरक्षा मानकों के अनुसार विकसित किया गया है, जिससे लोगों को सुरक्षित और आरामदायक अनुभव मिलेगा। परियोजना में बच्चों के लिए विशेष रूप से 750 वर्ग मीटर का किड्स प्ले एरिया बनाया गया है, जिसमें आधुनिक और सुरक्षित खेल उपकरण लगाए गए हैं। यह क्षेत्र बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है, ताकि वे सुरक्षित वातावरण में खेल सकें और मनोरंजन का आनंद ले सकें। इसके अलावा, युवाओं और खेल प्रेमियों के लिए 4900 वर्ग मीटर का अर्बन बीच विकसित किया गया है, जहां बीच वॉलीबॉल, फुटबॉल और अन्य खेल गतिविधियों का आयोजन किया जा सकेगा। यहां पतंग उत्सव और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन की भी योजना बनाई गई है, जिससे यह स्थान सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र बन सके। परियोजना की एक विशेष आकर्षण मरीन थीम पर आधारित सात विभिन्न प्रकार की मूर्तियां हैं, जो समुद्री जीवन और भारत की नौसेना की परंपरा को दर्शाती हैं। इसके अलावा, भारतीय नौसेना द्वारा प्रदान किया गया INS सूरत का एक विशेष मॉडल भी यहां प्रदर्शित किया गया है, जिसे इंडियन नेवी की उपलब्धियों और समुद्री सुरक्षा में उसके योगदान को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है। यह मॉडल विशेष रूप से युवाओं और छात्रों को प्रेरित करेगा और उन्हें देश की समुद्री सुरक्षा के महत्व के बारे में जागरूक करेगा।

डुमस सी-फेस को केवल मनोरंजन स्थल के रूप में ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में भी विकसित किया गया है। यहां 4700 वर्ग मीटर का एक बड़ा इवेंट ग्राउंड बनाया गया है, जहां गरबा, संगीत कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां और अन्य सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए जा सकेंगे। इसके अलावा, 200 से 250 लोगों की क्षमता वाला एक विशेष योगा ग्राउंड भी विकसित किया गया है, जहां नागरिक योग और ध्यान के माध्यम से स्वस्थ जीवनशैली अपना सकेंगे।

परियोजना में नागरिकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए आधुनिक सार्वजनिक सुविधाएं भी विकसित की गई हैं। यहां एक भव्य अराइवल प्लाजा बनाया गया है, जो आगंतुकों का स्वागत करेगा और उन्हें विभिन्न सुविधाओं तक पहुंच प्रदान करेगा। इसके साथ ही आधुनिक लाइटिंग और प्रोजेक्शन सिस्टम लगाए गए हैं, जो रात के समय इस क्षेत्र को और अधिक आकर्षक बनाएंगे। कुल 70 टॉयलेट ब्लॉकों की स्थापना की गई है, जिससे स्वच्छता और सुविधा सुनिश्चित की जा सके।

पार्किंग की सुविधा भी इस परियोजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहां एक मल्टी-लेवल मैकेनाइज्ड पार्किंग बिल्डिंग बनाई गई है, जिसमें 425 चार-पहिया और 77 दो-पहिया वाहनों के लिए पार्किंग की सुविधा उपलब्ध है। इसके अलावा, खुले क्षेत्र में 225 चार-पहिया और 300 दो-पहिया वाहनों के लिए पार्किंग की व्यवस्था की गई है, साथ ही दिव्यांगजनों के लिए 10 विशेष पार्किंग स्थान भी निर्धारित किए गए हैं।

पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए परियोजना में लगभग 33,500 वर्ग मीटर क्षेत्र में व्यापक लैंडस्केपिंग की गई है, जिसमें विभिन्न प्रकार के पौधे और हरियाली विकसित की गई है। यह न केवल क्षेत्र की सुंदरता को बढ़ाएगा, बल्कि पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में भी सहायक होगा। इसके अलावा, नागरिकों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने के लिए 14 शैक्षणिक साइनेज लगाए गए हैं, जिनमें पर्यावरण संरक्षण, समुद्री जीवन और स्वच्छता के महत्व के बारे में जानकारी दी गई है।

डुमस सी-फेस डेवलपमेंट प्रोजेक्ट के पूरा होने से सूरत के पर्यटन उद्योग को बड़ा बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। इससे न केवल स्थानीय नागरिकों को आधुनिक सुविधाएं मिलेंगी, बल्कि देश और विदेश से आने वाले पर्यटकों को भी आकर्षित किया जा सकेगा। पर्यटन के बढ़ने से स्थानीय व्यवसाय, होटल, रेस्तरां और अन्य सेवाओं को भी लाभ होगा, जिससे शहर की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे।

शहर के नागरिकों और अधिकारियों का मानना है कि यह परियोजना सूरत के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह परियोजना सूरत को केवल एक औद्योगिक शहर के रूप में ही नहीं, बल्कि एक आधुनिक और आकर्षक पर्यटन शहर के रूप में भी स्थापित करेगी। समुद्र के किनारे विकसित की गई यह आधुनिक सुविधा नागरिकों को प्रकृति के करीब लाने, स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने और सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

डुमस सी-फेस का उद्घाटन सूरत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा। यह परियोजना न केवल शहर की सुंदरता को बढ़ाएगी, बल्कि नागरिकों के जीवन स्तर में भी सकारात्मक परिवर्तन लाएगी। आने वाले वर्षों में यह स्थान सूरत की पहचान का प्रतीक बन जाएगा और शहर के विकास की नई कहानी लिखेगा।

रंग, संस्कृति और एकता का अद्भुत संगम: सरदारशहर परिषद सूरत का होली स्नेह मिलन समारोह बना सामाजिक सौहार्द का प्रेरक उत्सव

जीएनएस)। सूरत। रंगों के पावन पर्व होली की खुशियों और सामाजिक एकता के संदेश को साकार करते हुए सरदारशहर परिषद सूरत द्वारा आयोजित होली स्नेह मिलन समारोह इस वर्ष अत्यंत भव्य, आकर्षक और यादगार रूप में संपन्न हुआ। शहर के सिटी लाइट क्षेत्र स्थित तेरापंथ भवन के शुभम हॉल में शनिवार, 28 फरवरी 2026 की शाम आयोजित इस विशेष कार्यक्रम में समाज के सैकड़ों सदस्यों ने अपने परिवार सहित भाग लेकर इसे उत्साह, उमंग और अपनत्व का प्रतीक बना दिया। समारोह में हर आयु वर्ग के लोगों की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली, जिससे यह आयोजन केवल एक सांस्कृतिक कार्यक्रम ही नहीं, बल्कि सामाजिक एकता, परंपरा और भाईचारे का जीवंत उदाहरण बन गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ पारंपरिक भारतीय संस्कृति के अनुरूप दीप प्रज्ज्वलन और गणेश वंदना के साथ हुआ। जैसे ही दीप प्रज्वलित हुआ, पूरे सभागार में आध्यात्मिक वातावरण और सकारात्मक ऊर्जा का संचार हो गया। इसके पश्चात परिषद के अध्यक्ष संजय बोथरा ने मंच से सभी उपस्थित सदस्यों, अतिथियों और सहयोगियों का हार्दिक स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने परिषद की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए विशेष घोषणा की कि आगामी वर्ष परिषद अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण करेगी, जिसे रजत जयंती वर्ष के रूप में मनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह अवसर परिषद के लिए गौरव का विषय है और इसे समाज के सभी सदस्यों के सहयोग और सहभागिता से ऐतिहासिक रूप में मनाया जाएगा।

समारोह का मुख्य आकर्षण पारंपरिक होली उत्सव रहा, जिसमें रंग, संगीत और लोक संस्कृति का अद्भुत समन्वय देखने को मिला। उपस्थित लोगों ने एक-दूसरे को रंग लगाकर होली की शुभकामनाएं दीं और आपसी प्रेम, स्नेह तथा भाईचारे का संदेश दिया। इस अवसर पर फतेपुर की प्रसिद्ध मूलचंद एंड पार्टी द्वारा प्रस्तुत 'चंग पार्टी' ने कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए। चंग की मधुर धुनों और पारंपरिक लोकगीतों ने उपस्थित लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया और सभी लोग स्वतः ही झूमने और नृत्य करने लगे। लोक संगीत की इस प्रस्तुति ने लोगों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का कार्य किया और वातावरण को पूर्णतः उत्सवमय बना दिया।

कार्यक्रम में अतिथियों और समाज के सदस्यों के लिए विशेष रूप से पारंपरिक ठंडाई, हाई टी और विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों की उत्कृष्ट व्यवस्था की गई थी। इन व्यंजनों का आनंद लेते हुए लोगों ने एक-दूसरे के साथ समय बिताया और आपसी संबंधों को और अधिक मजबूत किया। यह आयोजन केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ करने और आपसी संवाद को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

समारोह के दौरान समाज के मेधावी और प्रतिभाशाली छात्रों को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। उन्हें मोमेंटो प्रदान कर उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों की सराहना की गई और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी गईं। यह सम्मान न केवल छात्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना, बल्कि अन्य विद्यार्थियों को भी शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके साथ ही परिषद के आर्थिक सहयोगदाताओं और विशेष अतिथियों को दुपट्टा और स्मृति-चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके योगदान और समाज के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का प्रतीक था।

समारोह में कई विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति ने आयोजन की शोभा को और बढ़ा दिया। मुख्य अतिथियों के रूप में पूर्व विधायक विवेक भाई पटेल, पूर्व भाजपा उपाध्यक्ष छोटूभाई पाटिल और फोस्टा अध्यक्ष कैलाश हाकिम विशेष रूप से उपस्थित रहे। इन सभी अतिथियों ने परिषद के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन समाज को एकजुट रखने और सांस्कृतिक परंपराओं को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने परिषद को भविष्य में भी इसी प्रकार समाजहित में कार्य करते रहने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर परिषद की कार्यकारिणी समिति के अनेक पदाधिकारी और सदस्य भी उपस्थित रहे, जिनमें अध्यक्ष संजय बोथरा, मंत्री अमित लूनिया, कोषाध्यक्ष शशिकांत जांगिड़, निवर्तमान अध्यक्ष मनोज लोहिया, पूर्व अध्यक्ष कमल लूनिया और प्रदीप बैद सहित अनेक प्रमुख सदस्य शामिल थे। इसके अलावा कार्यकारिणी समिति के चेनरूप सेठिया, किशनलाल लडिया, विनोद अग्रवाल, सुशील लूनिया, राजेश चौधरी, उम्मेद शर्मा, राजकुमार दुग्गड, विनोद छाजेड़, राजेंद्र बरडिया, जवरीमल नौलखा, आदित्य आंचलिया, मनीष छाजेड़, बसंत बेद, विनोद ओझा, संजय जांगिड़, बालकिशन आसालसरिया, रामप्रसाद अग्रवाल, हरीश चिंगोईवाला, गोविंद अग्रवाल, हरिओम स्वामी, संदीप सारस्वत, बालकिशन सराफ, प्रसन्न डागा, पीयूष दुगड़ और प्रमोद बोथरा सहित बड़ी संख्या में समाज के सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

समारोह के दौरान पूरे सभागार में उत्साह, आनंद और अपनत्व का वातावरण देखने को मिला। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी ने इस आयोजन का भरपूर आनंद लिया। यह कार्यक्रम केवल होली का उत्सव नहीं था, बल्कि यह समाज की एकता, संस्कृति और परंपरा का उत्सव भी था। इस आयोजन ने यह संदेश दिया कि जब समाज के लोग एकजुट होकर अपनी परंपराओं का उत्सव मनाते हैं, तो इससे सामाजिक संबंध और अधिक मजबूत होते हैं और समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

कार्यक्रम के अंत में परिषद के मंत्री अमित लूनिया ने सभी उपस्थित अतिथियों, सदस्यों और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस आयोजन की सफलता समाज के सभी सदस्यों के सहयोग और सहभागिता का परिणाम है। उन्होंने भविष्य में भी इसी प्रकार के सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते रहने का संकल्प व्यक्त किया, ताकि समाज की एकता और सांस्कृतिक विरासत को और अधिक सुदृढ़ किया जा सके।

इस प्रकार सरदारशहर परिषद सूरत का होली स्नेह मिलन समारोह रंग, संस्कृति, परंपरा और सामाजिक एकता का अद्भुत उदाहरण बनकर संपन्न हुआ। यह आयोजन न केवल उपस्थित लोगों के लिए यादगार बना, बल्कि इसने समाज में एकता, भाईचारे और सांस्कृतिक गौरव का संदेश भी प्रसारित किया। आने वाले समय में इस प्रकार के आयोजन समाज को और अधिक संगठित, मजबूत और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे।

भक्ति, संगीत और सख्यभाव से सराबोर हुआ श्री गोवर्धननाथजी हवेली का होली रसिया महोत्सव, वैष्णवों ने अनुभव किया दिव्य आनंद

जीएनएस)। सूरत। रंगों के पावन पर्व होली के आगमन के साथ ही शहर में धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों की श्रृंखला प्रारंभ हो गई है। इसी क्रम में डूमस रोड स्थित श्री गोवर्धननाथजी की हवेली में रविवार को भक्ति, संगीत और आध्यात्मिक भावनाओं से ओतप्रोत होली रसिया कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। इस विशेष अवसर पर वैष्णवाचार्य गोस्वामी व्रजराजकुमारजी के सान्निध्य में आयोजित इस कार्यक्रम में सूरत और आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में वैष्णव भक्तों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पूरे परिसर में भक्ति, श्रद्धा और आनंद का वातावरण व्याप्त रहा, जिससे उपस्थित भक्तों को एक अद्वितीय आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत पारंपरिक भक्ति वातावरण में हुई, जहां भगवान श्री गोवर्धननाथजी के समक्ष वैष्णव भक्तों ने श्रद्धा और प्रेम के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। हवेली परिसर को विशेष रूप से सजाया गया था, जिससे वातावरण और अधिक पवित्र और उत्सवमय बन गया। जैसे ही रसिया भजन और होली के पारंपरिक गीतों की धुन गूंजने लगी, पूरा परिसर भक्तिमय हो गया और उपस्थित श्रद्धालु भक्ति रस में डूब गए। यह आयोजन केवल एक सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि भगवान के प्रति प्रेम, समर्पण और सख्यभाव को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम बना। इस अवसर पर वैष्णवाचार्य गोस्वामी व्रजराजकुमारजी ने उपस्थित भक्तों को वचनामृत प्रदान करते हुए होली के आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि होली केवल रंगों का त्योहार नहीं है, बल्कि यह आस्था, विश्वास और भगवान के प्रति अटूट समर्पण का पर्व है। उन्होंने बताया कि होली के अवसर पर गाए जाने वाले रसिया केवल गीत नहीं होते, बल्कि यह भक्तों के हृदय से निकलने वाले सख्यभाव की अभिव्यक्ति होते हैं। जब भक्त भगवान के प्रति सच्चे प्रेम और मित्रभाव से भरे होते हैं, तो उनके हृदय से जो भाव निकलते हैं, वही भगवान की वास्तविक महिमा होती है।

उन्होंने आगे कहा कि जीवन में कई बार ऐसी परिस्थितियां आती हैं, जब व्यक्ति को कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे समय में, भले ही व्यक्ति भगवान में विश्वास रखता हो, लेकिन कठिन परिस्थितियों के कारण उसका भरोसा डगमगाने लगता है। उन्होंने भक्तों को समझाते हुए कहा कि भगवान की कृपा का स्वरूप बहुत व्यापक और गूढ़ होता है। कभी भगवान हमारी रक्षा करके अपनी कृपा दिखाते हैं, तो कभी बिना प्रत्यक्ष रक्षा किए भी हमारे जीवन में अपनी कृपा बनाए रखते हैं। इसलिए सच्चे भक्त को हर परिस्थिति में भगवान पर अटूट विश्वास बनाए रखना चाहिए, क्योंकि भगवान हमेशा अपने भक्तों के कल्याण के लिए कार्य करते हैं।

वैष्णवाचार्य ने ब्रह्म संबंध दीक्षा के महत्व पर भी प्रकाश डालते हुए कहा कि जो जीव ब्रह्म संबंध दीक्षा लेकर भगवान के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हो जाता है, भगवान उसे कभी नहीं छोड़ते। उन्होंने कहा कि यह केवल एक धार्मिक मान्यता नहीं, बल्कि भगवान का स्वयं का दिया हुआ आश्वासन है। भगवान अपने सच्चे भक्तों की हर परिस्थिति में रक्षा करते हैं और उन्हें कभी अकेला नहीं छोड़ते। यह विश्वास ही भक्त और भगवान के बीच के संबंध को और अधिक मजबूत बनाता है।

उन्होंने अपने प्रवचन में श्री गोवर्धननाथजी की हवेली द्वारा आयोजित विभिन्न धार्मिक आयोजनों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि पिछले रविवार को आयोजित छप्पन भोग मनोरथ और अन्य धार्मिक कार्यक्रमों ने वैष्णव समाज को भगवान की सेवा और भक्ति का विशेष अवसर प्रदान किया। उन्होंने कहा कि यह वैष्णवों का सौभाग्य है कि उन्हें श्री गोवर्धननाथजी की हवेली जैसे पवित्र स्थान पर भगवान की सेवा और भक्ति का अवसर प्राप्त होता है। ऐसे आयोजन न केवल भक्तों की आस्था को मजबूत करते हैं, बल्कि समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी सुदृढ़ करते हैं।

स्मार्ट सिटी से आगे बढ़ते हुए महिला-हितैषी शहर बनने की राह पर सूरत, स्वास्थ्य, सुरक्षा और आत्मनिर्भरता को मिलेगा नया आयाम

जीएनएस)। सूरत। आधुनिक बुनियादी ढांचे, स्वच्छता और तेज़ी से विकसित हो रहे शहरी ढांचे के कारण देश के अग्रणी स्मार्ट शहरों में अपनी पहचान स्थापित कर चुके सूरत अब एक नई और सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण दिशा में कदम बढ़ा रहा है। सूरत महानगर पालिका (एसएमसी) ने शहर को 'वुमन-फ्रेंडली' यानी महिला-हितैषी शहर के रूप में विकसित करने की महत्वाकांक्षी योजना तैयार की है, जिसका मुख्य उद्देश्य शहर की महिलाओं को सुरक्षित वातावरण, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं और आर्थिक आत्मनिर्भरता प्रदान करना है। यह पहल विशेष रूप से उन महिला श्रमिकों और कामकाजी महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही है, जो रोजगार के लिए देश के विभिन्न हिस्सों से सूरत आती हैं और यहां के औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों में अपनी भूमिका निभाती हैं।

सूरत भारत के प्रमुख औद्योगिक शहरों में से एक है, जहां वस्त्र उद्योग, डायमंड उद्योग और अन्य औद्योगिक गतिविधियों में बड़ी संख्या में महिलाएं कार्यरत हैं। इनमें से कई महिलाएं बाहरी राज्यों से आकर यहां श्रमिक के रूप में काम करती हैं और अक्सर सीमित संसाधनों और स्वास्थ्य सुविधाओं के बीच जीवन यापन करती हैं। इन महिलाओं की स्वास्थ्य सुरक्षा और जीवन स्तर को बेहतर बनाने के उद्देश्य से महानगर पालिका ने विशेष रूप से स्वास्थ्य और स्वच्छता से जुड़े कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की है। इस योजना के तहत वर्ष 2026 के दौरान शहर के विभिन्न 'कड़ियानाकों' यानी श्रमिक बाजारों और शेल्टर होम्स में 50 विशेष स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए जाएंगे, जहां महिलाओं को निःशुल्क स्वास्थ्य जांच, परामर्श और आवश्यक चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराई जाएगी।

इन स्वास्थ्य शिविरों का उद्देश्य केवल बीमारियों का उपचार करना ही नहीं, बल्कि महिलाओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाना भी है। इन कार्यक्रमों में महिलाओं को व्यक्तिगत स्वच्छता, पोषण, मातृ स्वास्थ्य, एनीमिया की रोकथाम और संक्रामक बीमारियों से बचाव के उपायों के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी। स्वास्थ्य विशेषज्ञों और प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं द्वारा महिलाओं को यह समझाया जाएगा कि नियमित स्वास्थ्य जांच और स्वच्छता की आदतें उन्हें गंभीर बीमारियों से बचा सकती हैं और उनके जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बना सकती हैं। यह पहल विशेष रूप से उन महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण है, जो लंबे समय तक कठिन श्रम करती हैं और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को अक्सर नजरअंदाज कर देती हैं।

महिला-हितैषी शहर बनने की दिशा में सूरत महानगर पालिका का एक और महत्वपूर्ण कदम महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण पर केंद्रित है। प्रशासन ने एक विस्तृत योजना तैयार की है, जिसके तहत लगभग 2000 महिलाओं को रोजगारोन्मुखी कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना और उन्हें रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराना है। प्रशिक्षण कार्यक्रम विभिन्न सरकारी विभागों, सामाजिक संस्थाओं और कौशल विकास संगठनों के सहयोग से संचालित किए जाएंगे, जिससे महिलाओं को व्यावहारिक और उपयोगी कौशल प्राप्त हो सके।

इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में महिलाओं को आधुनिक और पारंपरिक दोनों प्रकार के कौशल सिखाए जाएंगे। आधुनिक प्रशिक्षण में फूड प्रोसेसिंग, बेकरी उत्पाद निर्माण, किचन गार्डनिंग और खाद्य संरक्षण (कैनिंग) जैसी गतिविधियां शामिल होंगी, जिससे महिलाएं छोटे स्तर पर स्वरोजगार शुरू कर सकें और अपनी आय में वृद्धि कर सकें। इसके अलावा, सूरत की पारंपरिक कला 'ज़रदोशी' वर्क और अन्य हस्तकलाओं का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा, जिससे महिलाएं घर बैठे ही हस्तनिर्मित उत्पाद तैयार कर बाजार में बेच सकें। यह पहल न केवल महिलाओं की आर्थिक स्थिति को मजबूत करेगी, बल्कि शहर की पारंपरिक कला और सांस्कृतिक विरासत को भी संरक्षित करने में सहायक होगी।

सूरत महानगर पालिका की इस पहल का व्यापक सामाजिक प्रभाव भी देखने को मिलेगा। जब महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती हैं, तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे समाज में अधिक सक्रिय और सशक्त भूमिका निभाने में सक्षम होती हैं। इससे न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन में सुधार होता है, बल्कि उनके परिवार और समाज के समग्र विकास में भी सकारात्मक योगदान मिलता है। आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं को निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है और उन्हें सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाती है।

महिला-हितैषी शहर की अवधारणा केवल स्वास्थ्य और रोजगार तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान भी शामिल है।

निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा का प्रेरणादायी उदाहरण बना अग्रवाल समाज ट्रस्ट का शिविर, सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण और नेत्र जांच के लिए उमड़ी अभूतपूर्व भीड़

जीएनएस)। सूरत। समाज सेवा और जनकल्याण की भावना को साकार रूप देते हुए अग्रवाल समाज ट्रस्ट द्वारा आयोजित निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर में लोगों का उत्साह और विश्वास देखते ही बन रहा था। गर्भाशय (सर्वाइकल) कैंसर की रोकथाम और नेत्र रोगों के उपचार के उद्देश्य से आयोजित इस शिविर में बड़ी संख्या में महिलाओं, युवतियों और वरिष्ठ नागरिकों ने भाग लेकर स्वास्थ्य के प्रति अपनी जागरूकता और समाज के प्रति विश्वास को प्रकट किया। यह शिविर न केवल चिकित्सा सेवा का माध्यम बना, बल्कि समाज में स्वास्थ्य जागरूकता फैलाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी साबित हुआ।

अग्रवाल समाज हेल्थ सेंटर में पिछले चार वर्षों से सर्वाइकल कैंसर प्रतिरोधक टीकाकरण कार्यक्रम निरंतर संचालित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य महिलाओं और किशोरियों को इस गंभीर बीमारी से बचाव के लिए समय पर टीकाकरण उपलब्ध कराना है। जनवरी 2026 से इस कार्यक्रम को भामाशाहों और समाज के दानदाताओं के सहयोग से पूर्णतः निःशुल्क शिविर के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है, जिससे समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को भी इस महत्वपूर्ण चिकित्सा सुविधा का लाभ मिल सके। इस पहल ने समाज में व्यापक स्तर पर सकारात्मक संदेश दिया है और महिलाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

1 मार्च को आयोजित पांचवें निःशुल्क सर्वाइकल वैक्सीन एवं नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन स्वर्गीय श्रीमती सीता देवी रामोतार जी भूत की पावन स्मृति में किया गया। उनके पुत्र मुरारीलाल भूत तथा पौत्र दीपक भूत, संदीप भूत और विकास भूत ने इस शिविर के आयोजन में विशेष सहयोग प्रदान किया। उनके इस योगदान ने समाज सेवा की परंपरा को आगे बढ़ाने का प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया। इस शिविर में कुल 102 बहनों और कन्याओं को सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए आवश्यक टीका लगाया गया, जिससे उन्हें भविष्य में इस गंभीर बीमारी से सुरक्षा प्राप्त हो सकेगी। इसके साथ ही आयोजित नेत्र चिकित्सा शिविर में भी लोगों की भारी भागीदारी देखने को मिली। कुल 73 लाभार्थियों की आंखों की विस्तृत जांच की गई, जिनमें से 14 व्यक्तियों को निःशुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन के लिए चयनित किया गया। इसके अलावा, 21 जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क चश्मे वितरित किए गए, जिससे उन्हें दृष्टि संबंधी समस्याओं से राहत मिल सके। यह सेवा विशेष रूप से उन लोगों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुई, जो आर्थिक कारणों से समय पर नेत्र उपचार नहीं करवा पाते हैं।

शिविर का शुभारंभ समाज के आराध्य और प्रेरणास्रोत महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी पदाधिकारियों और समाजजनों ने समाज सेवा के इस पवित्र कार्य को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में अग्रवाल समाज के अध्यक्ष रामप्रसाद अग्रवाल (कोकी भाई), चेयरमैन श्याम खेतान, सचिव राजकुमार अग्रवाल, कोषाध्यक्ष गोवर्धन मोदी, संजय जगनानी, हेल्थ सेंटर चेयरमैन श्रवण अग्रवाल, गौरीशंकर अग्रवाल, जगमोहन जालान और सीए लोकेश खदरिया सहित अनेक पदाधिकारी और समाज के गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान समाज के वरिष्ठ सदस्यों और अतिथियों ने इस प्रकार के स्वास्थ्य शिविरों की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सर्वाइकल कैंसर जैसी गंभीर बीमारी के प्रति जागरूकता फैलाना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि समय पर टीकाकरण और जांच के माध्यम से इस बीमारी को रोका जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि नेत्र रोगों की समय पर जांच और उपचार से अंधत्व जैसी गंभीर समस्याओं से बचा जा सकता है। इस प्रकार के शिविर समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं।

इस अवसर पर संदीप सिंघल, वीणा सिंघल, दक्ष भूत, राजू लोहिया, दिलीप मित्तल, विश्वनाथ पचेरिया, प्रदीप सुरेखा और अजय बिदावतका सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा को और अधिक बढ़ाया। सभी अतिथियों ने अग्रवाल समाज ट्रस्ट की इस सेवा भावना की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अग्रवाल समाज हेल्थ सेंटर के पूर्व चेयरमैन अरविंद गाड़िया और प्रभारी विनोद चिड़ावावाला ने जानकारी देते हुए बताया कि समाज द्वारा भविष्य में भी इस प्रकार के सेवा कार्य निरंतर जारी रखे जाएंगे। उन्होंने बताया कि आगामी 7 मार्च को बसंत कुमार एवं राज कुमार अग्रवाल (जय बाबा) के सहयोग से निःशुल्क हृदय चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जाएगा, जिसमें हृदय रोगों से संबंधित जांच और परामर्श की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। इसके अतिरिक्त, 8 मार्च और 19 मार्च को श्रीमती कांता देवी गोविंद प्रसाद सरावगी (लक्ष्मीपति ग्रुप) के सहयोग से सर्वाइकल वैक्सीन शिविर आयोजित किए जाएंगे, जिससे अधिक से अधिक महिलाओं और किशोरियों को इस महत्वपूर्ण चिकित्सा सुविधा का लाभ मिल सके।